

(Translated by Google)

विषय: भारत और दुनिया के साथी नागरिकों से एक आह्वान कि वे “धर्म के पुनरुत्थान, बुराइयों के उन्मूलन, सज्जनों/संतों के उत्थान और दुनिया में धर्म संस्थान की स्थापना नामक एक महत्वाकांक्षी परियोजना में सकारात्मक रूप से भाग लें ताकि समाज में सभी के लिए सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित हो, नंदी की बधियाकरण और गौवंश की हत्या पर रोक लगे, “वरिष्ठ नागरिकों, संतों और ऋषियों का सम्मान सुनिश्चित हो और समाज में विश्वास और आत्मविश्वास बहाल हो, पारिस्थितिकी तंत्र में संतुलन लाकर हमारी सभ्यता को गौरव बहाल हो – के संबंध में :

भारत और दुनिया के प्यारे साथी नागरिकों

इस लेटर में दिखाई गई दिलचस्पी के बारे में भारत के हेड ऑफ स्टेट को पहले ही बता दिया गया है, लेकिन क्योंकि यह मामला इतना ज़रूरी और अर्जेंट है, इसलिए इसे सोशल मीडिया (Linkedin और Facebook) पर शेयर करने और कुछ चुने हुए लोगों को फॉरवर्ड करने की ज़रूरत महसूस हुई ताकि उन्हें पता चल सके और इस काम में उनका सहयोग मिल सके।

इस विषय पर ये बातें बताई गई हैं, जिनमें शामिल हैं: (1) बड़ी आउटलाइन; (2). धर्म के पुनरुत्थान और धर्म संस्थान की स्थापना से हम क्या-क्या हासिल करेंगे (3). धर्म के पुनरुत्थान में किस रेफरेंस या बेसलाइन का ध्यान रखा जाएगा जिससे हम पूरी सोशल सिक्योरिटी, काम का बंटवारा और इनकम का बंटवारा कर सकें, जैसा कि ऊपर पॉइंट नंबर 2 में बताया गया है? (4). जब हम धर्म के पुनरुत्थान और धर्म संस्थान की स्थापना की बात करते हैं, तो पुनरुत्थान, “अधर्म-अधर्मी, धर्म, धर्म संस्थान, राजनीति” शब्द की बेसिक परिभाषाएँ क्या हैं, जिन्हें ध्यान में रखा जाएगा? (5). धर्म का पुनरुत्थान क्यों और कैसे ज़रूरी हो गया; (5.1). आम जनता में बुद्धिमान लोगों के साथ चर्चा, (5.2). बुद्धिजीवी लोगों के साथ चर्चा , (5.3). तथाकथित संतों और शैतान के संस्करण (5.4). गुरु के साथ चर्चा ; (5.5). आध्यात्मिक लोगों के साथ चर्चा , (5.5.ii). धर्म को फिर से ज़िंदा करने की कोशिश करते हुए, 'बैल (नंदी)-गाय' का सम्मान वापस लाने की ज़रूरत, (5.6). साल 1999 में दी गई इस हज़ार साल की ज्योतिषीय भविष्यवाणी और भारत, पाकिस्तान और दुनिया में हुई कुछ ज़रूरी घटनाएँ। (5.7). कोरोना के फैलने और दुनिया भर में लॉकडाउन के दौरान बड़ी चर्चा , (6). इस स्थिति में क्या किया जा सकता है? (7). समापन प्रस्तुति

(1). व्यापक रूपरेखा

कहते हैं कि:

“चरों के माध्यम से नकारात्मक सकारात्मक में बदल जाता है,

अवचेतना के ज़रिए बेहोशी चेतना में बदल जाती है
वेरिएबल्स के ज़रिए अंधेरा/काला/रात, चमक/सफ़ेद/दिन में बदल जाता है,
वेरिएबल्स के ज़रिए डिस-ऑर्गनाइज़ेशन एक ऑर्गनाइज़ेशन में बदल जाता है जो आगे वेरिएबल्स के
ज़रिए ऑर्गनाइज़ेशनल डेवलपमेंट लाता है,
आज के बदमाश को वेरिएबल्स के ज़रिए कल जेंटलमैन बनाया जा सकता है ” ,

अगर हम ऊपर कही बातों पर सोचें तो यह साफ़ तौर पर कहा जा सकता है कि दुनिया भर के समाजों में हम जो भी नेगेटिविटी, अंधेरा, मिसमैनेजमेंट देख रहे हैं, उसे अलग-अलग स्ट्रेटेजी के कॉम्बिनेशन से आसानी से पॉजिटिविटी में बदला जा सकता है। **धर्म** दुनिया की व्यवस्था, नेकी और सही व्यवहार का बुनियादी सिद्धांत है। इसलिए अगर ऊपर बताई गई बातों के हिसाब से हम धर्म को फिर से ज़िंदा करने और धर्म संस्थान बनाने के बारे में सोचें, तो हम तालमेल, सच्चाई और जीवन के विकास को वापस ला पाएंगे ।

कहा जाता है: “ धर्म ईवी हातो हत्या , धर्म सुरक्षा करता है सुरक्षित (धर्म एवं हातो हन्ति , धर्मो रक्षति रक्षितः ” – जो धर्म को नष्ट करता है, वह धर्म द्वारा नष्ट हो जाता है। धर्म कोई रिलीजन नहीं है – यह सही जीवन जीने का यूनिवर्सल सिद्धांत है। यह अस्तित्व का ढांचा है: जब इसे बनाए रखा जाता है, तो यह टिका रहता है; जब इसे तोड़ा जाता है, तो यह खत्म हो जाता है।

अलग-अलग समय (युग) का इतिहास बताता है कि धर्म के बिना तरक्की खुद को नुकसान पहुँचाने वाली है, लेकिन जब धर्म रास्ता दिखाता है, तो हर लेवल पर सच्चाई और मेल-जोल बढ़ता है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि हवा में फैली सभी नेगेटिविटी का मुकाबला करने के लिए, धर्म का फिर से ज़िंदा होना ही दुनिया के पास बचा हुआ एकमात्र ऑप्शन हो सकता है।

(2) धर्म के पुनरुत्थान और धर्म संस्थान की स्थापना से हम क्या-क्या हासिल करेंगे:

बेसिक अचीवमेंट ये होगी

2.ii। यह कहा जा सकता है कि धर्म के पुनरुत्थान और धर्म संस्थान की स्थापना के द्वारा, हम व्यक्ति (हमारे वैध अतिथि और आगंतुकों सहित) पूर्ण सामाजिक सुरक्षा प्राप्त करेंगे (अर्थात शारीरिक सुरक्षा की सुरक्षा/गारंटी, भोजन, पानी, आश्रय, कपड़े, शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, काम करने का अवसर (रोजगार), व्यक्तिगत स्थान और किसी की रचनात्मक गतिविधियों के लिए समर्थन, मनोरंजन, शारीरिक व्यायाम सह खेल का मैदान, उपयुक्त रोजगार के रास्ते और सभी जरूरतमंदों/साधकों के लिए सम्मानजनक जुड़ाव, उचित जानकारी और मार्गदर्शन केंद्र के अलावा दाह संस्कार/दफनाने के लिए स्थान इत्यादि। समाज और राष्ट्रीय सरकार द्वारा संयुक्त रूप से प्रबंधित एक सम्मानजनक

वातावरण में, धर्म के अनुसार व्यक्ति की आय से समाज को अपने हिस्से के रूप में प्राप्त आय के माध्यम से।

2.ii. यह ध्यान देने वाली बात है कि धर्म को फिर से ज़िंदा करके और धर्म संस्थान बनाकर, हम डेवलप्ड देशों में अकेलेपन और बाकी सभी देशों में बेरोज़गारी की समस्या को पूरी तरह खत्म/मिटा/खत्म कर सकते हैं; हम साफ़-सफ़ाई और हाइजीन (शारीरिक, मानसिक और इमोशनल) बनाए रख पाएँगे। इसके अलावा, धर्म संस्थान बनाकर हम जो खाना खाते हैं, जो पानी पीते हैं और जो हवा अंदर लेते हैं, उसकी क्वालिटी को बेहतर बना पाएँगे, यानी धर्म को फिर से ज़िंदा करके और धर्म संस्थान बनाकर हम हर इंसान के साथ-साथ अपने समाज, अपने देश और पूरी दुनिया के हैप्पीनेस रेश्यो को बेहतर बना पाएँगे।

2.iii . यह ध्यान देने वाली बात है कि धर्म के फिर से शुरू होने की प्रक्रिया में हम अलग-अलग धर्मों को एक साथ ला पाएँगे और इस समझौते पर बंटे हुए देशों, जैसे; भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश को एक कर पाएँगे। इसके अलावा, अलग-अलग जातियों, पंथों, धर्मों के बीच जो भी दुश्मनी हम अभी देख रहे हैं, वह अपने आप खत्म हो जाएगी।

2.iv. इसके अलावा , तीन पीढ़ियों (माँ-पिता, पति-पत्नी, और बेटी-बेटा) में परिवार के सदस्यों के बीच और समाज (स्थानीय सरकार) और राष्ट्रीय सरकार के बीच इनकम/उपज का सही बंटवारा पक्का करके, हर किसी को 12.5% का बराबर हिस्सा मिलेगा। इससे जेंडर इक्वालिटी पक्की होगी, दो बच्चों के नियम को बढ़ावा मिलेगा, जिससे आबादी बढ़ेगी, और मोनोगैमी को बढ़ावा मिलेगा।

2.v. इसके अलावा , समाज (लोकल गवर्नमेंट) और नेशनल गवर्नमेंट के बीच इनकम का बराबर हिस्सा होने से, एक तरफ इंस्टीट्यूशन्स का ज़िम्मेदाराना बर्ताव बढ़ेगा और दूसरी तरफ कई एजेंसियों और स्टेट गवर्नमेंट जैसी दूसरी बिचौलिया इंस्टीट्यूशन्स की ज़रूरत खत्म हो जाएगी।

2.vi. यह ध्यान देने वाली बात है कि धर्म को फिर से ज़िंदा करके और धर्म संस्थान बनाकर हम जंगल और पेड़ों के कवर को उसके सबसे अच्छे लेवल 37 परसेंट (शास्त्रों में दिए गए साइंटिफिक लॉजिक के हिसाब से) पर वापस ला पाएँगे, जो इकोसिस्टम में बैलेंस वापस लाने में एक अहम बात होगी।

2.vii . लगातार हाथ और मशीन से होने वाले काम के बीच लॉजिकल बैलेंस बना पाएँगे, जिससे बिजली तो बचेगी ही, प्रदूषण भी कम होगा या बिजली बनाने के लिए जगह की ज़रूरत भी कम होगी, समाज की पूरी सेहत भी बेहतर होगी और समाज में अकेलेपन की दिक्कतों को मैनेज करने में मदद मिलेगी।

2.viii . यह ध्यान देने वाली बात है कि धर्म के फिर से शुरू होने और धर्म संस्थान बनने से, नॉर्मल कोर्ट केस का सेटलमेंट धर्म संस्थान और नेशनल गवर्नमेंट के जॉइंट अधिकार क्षेत्र में आ जाएगा, इसलिए कॉन्स्टिट्यूशनल कोर्ट के केस को छोड़कर बाकी पेंडिंग केस बिल्कुल खत्म हो जाएंगे। इसके अलावा, एजुकेशन और हेल्थकेयर भी धर्म संस्थान और नेशनल गवर्नमेंट के अधिकार क्षेत्र में आ जाएंगे, इसलिए हेल्थ और एजुकेशन की सुविधाएं समाज की कृपा और आभार से जमा हुए फंड और कंट्रीब्यूशन से पोस्ट पेमेंट बेसिस पर दी जा सकती हैं ।

2.ix. यह ध्यान दिया जा सकता है कि धर्म के पुनरुत्थान और धर्म संस्थान की स्थापना से , समाज एक साधारण नियम का पालन करके लोगों को स्वस्थ, खुशहाल और पवित्र जीवन शैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित कर सकेगा: 'प्रार्थना करो, खेलो और पार्टी करो' (निजी तौर पर प्रार्थना करो; निर्दिष्ट स्थानों पर खिलाड़ियों के साथ खेलो; सार्वजनिक रूप से भागीदारों के साथ पार्टी करो)।

2.x. व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और पूरी दुनिया आदि के हैप्पीनेस रेश्यो में बढ़ोतरी ।

*[ऊपर दी गई जानकारी के लिए, कृपया इसे resurrectionofdharma.com वेबसाइट से मुफ्त में डाउनलोड करके देखें।

i. पहले अल्टरनेट इकॉनमी किताब से टॉपिक नंबर 16, फिर उसी किताब से दूसरा टॉपिक।

ii. किताब: धर्म और उससे जुड़े मुद्दों पर कुछ-इसे अपनाने की ज़रूरत (धर्म को अपनाना क्या, क्यों और कैसे और इकॉनमी, ज्यूडिशियरी और एडमिनिस्ट्रेशन को फिर से बनाना, और इसकी ज़रूरत)

iii. "पब्लिक लेटर्स और नेशनल सबमिशन" खास तौर पर: ("वॉयस ऑफ़ कॉन्शियस: 7 लेटर्स डिफाइनिंग धर्म"ज़ रिसरेक्शन", और "वॉयस ऑफ़ धर्म: पहलगांम ट्रेजेडी पर प्रेसिडेंट, प्राइम मिनिस्टर, स्पिरिचुअल गुरुओं, पार्लियामेंटेरियन्स, मीडिया और सिटिज़न्स को लेटर्स"), जो हमारे पास बचे हुए एकमात्र सॉल्यूशन के लिए लिखे गए हैं: रखे गए इश्यूज पर नेशनल रेफरेंडम।

iv. दूसरी किताबें वेबसाइट पर डाल दी गई हैं।

v . पॉडकास्ट और इंटरव्यू।]*

(3). धर्म को फिर से ज़िंदा करने में किस रेफरेंस या बेसलाइन का ध्यान रखा जाएगा, जिससे हम पूरी सोशल सिक्योरिटी, काम का बँटवारा और इनकम का बँटवारा कर सकें, जैसा कि ऊपर पॉइंट नंबर 2 में बताया गया है?

कहा जाता है कि बिज़नेस (चीज़ों, सर्विस या ज़िंदगी में ट्रेडिंग का) बस एक फोटोकॉपी है, और जब भी बिज़नेस कमज़ोर हो जाता है, तो ओरिजिनल को देखने और खुद को या प्रोसेस को या दोनों को ठीक करने का समय आ जाता है। इंसानों में यह कहा जा सकता है कि आदिवासी-आदिवासी/एबोरिजिनल)

ओरिजिनल हैं और सभ्य दुनिया इन ओरिजिनल से सीख लेकर उन पर बना एक सुपरस्ट्रक्चर है। इसलिए, जब भी सुपरस्ट्रक्चर कमज़ोर होता दिखे (तब हमें लगता है कि कोई सभ्यता की समस्या है) तो इंसान के पास यही एक ऑप्शन बचता है कि वह ओरिजिनल-आदिवासी जनजातियों के पास जाए- और एक बार फिर इन ओरिजिनल/जनजातियों से सुराग/लीड/डायरेक्शन ले कि कैसे इन (जनजातियों) ने बेसिक सिक्योरिटी (फिजिकल सिक्योरिटी, फूड सिक्योरिटी और रहने की जगह) का ध्यान रखा है और अपना एडमिनिस्ट्रेशन, जस्टिस चलाया है और अपने कबीले को बनाए रखा है, बेसिक हेल्थ, एजुकेशन, एंटरटेनमेंट और एनवायरनमेंट प्रोटेक्शन का ध्यान रखा है, साथ ही अपनी प्रार्थना भी की है जिसने उन्हें सदियों से खुद को बनाए रखने के लिए परफेक्ट बनाया है।

(3.1). कहा जाता है कि बस्ती-सभ्यता की शुरुआत में यह सोचा गया था कि समाज को उन सभी कामों का ध्यान रखना होगा जो आम तौर पर हर आदिवासी करता है और साथ ही उन नए कामों का भी जो बस्ती/सभ्यता की वजह से आ सकते हैं।

कहा जाता है कि बहुत सोच-विचार के बाद यह साफ़ हो गया कि बस्ती/समाज/सभ्यता को बनाए रखने के लिए, किसी भी समाज को किसी भी समय, जगह/स्पेस और एनर्जी में जो भी काम करना पड़ सकता है, उसे मोटे तौर पर चार बड़े हिस्सों में बराबर बांटा जा सकता है: (a). बेसिक सेफ्टी और सिक्योरिटी, (b). एजुकेशन, प्लानिंग और स्ट्रैटेजी, नियम और कानून बनाना, (c). सामान इकट्ठा करना, सामान स्टोर करना और समाज में उसका डिस्ट्रीब्यूशन, (d). समाज को दूसरी सभी सपोर्ट सर्विस जैसे हेल्थ सर्विस, इंजीनियरिंग सर्विस, साफ़-सफ़ाई और हाइजीन बनाए रखना, एंटरटेनमेंट का इंतज़ाम वगैरह।

***उदाहरण के लिए:** ऊपर दिए गए सीमांकन के अनुसार, भारत की 130 करोड़ की आबादी का एक चौथाई हिस्सा और लगभग 32.5 करोड़ लोगों को उनकी रुचि, अनुभव और उम्र के अनुसार सुरक्षा के अलग-अलग पहलुओं से जोड़ा जाना चाहिए, चाहे वह हो:

- (ए) कक्षा शिक्षा, क्षेत्र प्रशिक्षण और विशेष कौशल प्राप्त करना,
- (b) फील्ड ड्यूटी करना या स्पेशल असाइनमेंट में शामिल होना
- (सी) खुफिया और जासूसों से मिली जानकारी का मैनेजमेंट और मॉनिटरिंग
- (घ) शिक्षा, प्रशिक्षण, विशेष कौशल और विवाद समाधान प्रदान करना,

अगर हम एक हेल्दी और खुशहाल माहौल में इंसानों की एवरेज उम्र सौ साल मानें, तो ऊपर बताए गए हिसाब से पच्चीस साल की उम्र तक कोई फिजिकली बड़ा हो सकता है, पढ़ाई-लिखाई और ट्रेनिंग ले सकता है, फिर पच्चीस से पचास साल तक ज़मीन पर काम कर सकता है, फिर पचास से पचहत्तर साल तक मैनेजमेंट और फिर पचहत्तर से सौ साल की उम्र तक एडमिनिस्ट्रेशन, ट्रेनिंग देना और इंसान

दिलाना)। अगर हम इस बंटवारे को देखें, तो सिक्योरिटी के लिए फील्ड में तैनात होने वाले असल लोगों की संख्या आबादी का सोलह में से एक होनी चाहिए, यानी $130 \text{ करोड़ आबादी} / 16 = 8.125 \text{ करोड़ लोग}$ । इसके अलावा, क्योंकि इन सर्विसेज़ को समाज मैनेज करता है, इसलिए शुरुआत में सभी सिक्योरिटी वालों को कम से कम दस-पंद्रह हजार रुपये महीने की सैलरी दी जा सकती है, जिसे समाज को मिलने वाले रेवेन्यू के आधार पर बदला जा सकता है। भारत जिस खतरनाक हालत से गुज़र रहा है, उसमें उसे फिजिकल सेफ्टी के लिए इतनी संख्या में युवाओं को भर्ती करना चाहिए, जिसमें पुरुषों और महिलाओं की बराबर हिस्सेदारी पक्की हो। यदि हम विवरण देखें (ऊपर वर्णित पुस्तक वैकल्पिक अर्थव्यवस्था में "विषय-7 युद्ध का अर्थशास्त्र, युद्ध के कारण अर्थव्यवस्था और आर्थिक युद्ध"), तो हम सराहना करेंगे कि इन आठ (8) करोड़ से अधिक सुरक्षा कर्मियों के लिए यह वित्तपोषण आसानी से समाज द्वारा ही प्रबंधित किया जा सकता है (धन के हिस्से से (12.5%) जो समाज को अपने सभी सदस्यों की आय से प्राप्त होगा)।

कहा जाता है कि फिजिकल सिक्योरिटी सबसे पहले और सबसे ज़रूरी है, इसलिए हमें (भारत को) आठ करोड़ से ज़्यादा सिक्योरिटी वालों को शामिल करने को सबसे ज़्यादा प्रायोरिटी देनी चाहिए, जो बाहरी एजेंसियों के साथ-साथ अंदरूनी बदमाशों, गुंडों, बदमाशों, बदमाशों वगैरह से देश के कोने-कोने की सुरक्षा करेंगे। आठ करोड़ से ज़्यादा सिक्योरिटी वालों को नौकरी देने की ये कोशिशें न सिर्फ सेफ्टी और सिक्योरिटी देंगी, बल्कि नौकरी की डिमांड भी खत्म कर देंगी।

यह ध्यान देने वाली बात है कि, फिजिकल सेफ्टी और तेज़ और सही जस्टिस डिलीवरी सिस्टम पक्का करने के बाद ही हम समाज के हर सदस्य और उसके असली मेहमानों को बाकी सभी सोशल सिक्योरिटी (खाना, पानी, रहने की जगह, जस्टिस, हेल्थ, एजुकेशन, एंटरटेनमेंट और अपनी बात कहने के मौके वगैरह) देने के बारे में सोच सकते हैं।

(3.2). यह कहा जा सकता है कि धर्म को फिर से ज़िंदा करने और धर्म संस्था बनाने की सबसे ज़रूरी बात यह है कि परिवार, देश और समाज के लोगों के बीच इनकम का सही और सही बंटवारा हो, जिसका मतलब है कि हर सौ (रुपये वगैरह) की कमाई में से एक व्यक्ति कमाता है:

- (i) 25 परसेंट हिस्सा अपने माता-पिता (यानी पुरानी पीढ़ी के लिए माता और पिता दोनों का बराबर हिस्सा) का कर्ज़ चुकाने के लिए रखना चाहिए।
- (ii) 25 परसेंट लोन अपने बच्चों के लिए (जैसा कि उनके माता-पिता करते आ रहे हैं और समाज में परंपरा को जारी रखने के लिए) बेटे और बेटी के लिए बराबर-बराबर रखा जाना चाहिए।
- (iii) 25 परसेंट हिस्सा खुद और जीवनसाथी के लिए मार्क किया जाना चाहिए (यानी मौजूदा पीढ़ी के लिए खुद और जीवनसाथी के बीच बराबर),

(iv) धर्म और सरकार के लिए पच्चीस प्रतिशत हिस्सा होना चाहिए, धर्म संस्थान (यानी समाज, लोकल सरकार) और नेशनल सरकार के बीच बराबर।

यह आसानी से देखा जा सकता है कि आय के इस विभाजन/वितरण से हम "लैंगिक समानता, पुरानी पीढ़ी के साथ-साथ अगली/भविष्य की पीढ़ियों के लिए समान सम्मान, समाज/धर्म/स्थानीय शासन के साथ-साथ राज्य/राष्ट्रीय सरकार" लाने में सक्षम होंगे।

इसके अलावा, यह भी देखा जा सकता है कि अगर किसी कैटेगरी में लोग ज्यादा हैं, तो या तो उनका हिस्सा कम हो जाएगा या वे दूसरों का हिस्सा खा जाएंगे और इस तरह परिवार, समाज और देश में तालमेल बिगड़ेगा। इसलिए यह कहा जा सकता है कि इनकम के इस बंटवारे से हम समाज में दो बच्चों के नियम, एक शादी के नियम (एक से ज्यादा शादी/एक से ज्यादा पति होने की प्रथा का ह्रास) और सरकार बनाने वाली संस्थाओं को बेहतर बनाने पर जोर दे पाएंगे, यानी सिर्फ एक सरकार हो जो नेशनल सरकार हो (भारत में राज्य सरकारों जैसी कई सरकार बनाने वाली संस्थाओं को छोड़कर)।

यह भी ध्यान देने वाली बात है कि जब इनकम/रिसोर्स/यील्ड का यह डिस्ट्रीब्यूशन पैटर्न काम/ज़िम्मेदारियों के डिस्ट्रीब्यूशन के साथ मिल जाता है, तो यह सिस्टम परिवार, समाज और देश के मैनेजमेंट से जुड़े सभी सवालों के जवाब दे पाएगा। इसलिए, धर्म का फिर से ज़िंदा होना और धर्म की स्थापना को उन सभी बुराइयों का एकमात्र इलाज कहा जा सकता है जो हम अभी पर्सनल लेवल पर, परिवार में, समाज में, देश में और इंटरनेशनल लेवल पर देख रहे हैं।

(4). जब हम धर्म के फिर से शुरू होने और धर्म संस्थान की स्थापना की बात करते हैं, तो **इस शब्द की बेसिक परिभाषा क्या है: फिर से शुरू होना, “अधर्म-अधर्मी, धर्म, धर्म संस्थान, राजनीति”,** कोई ध्यान में रखेगा?

नीचे दिया गया है:

(4.1) **पुनरुत्थान:** i. किसी ऐसी चीज़ को वापस लाना जो लंबे समय से मौजूद नहीं है या जिसका इस्तेमाल नहीं हुआ है।

ii. किसी लुप्त या समाप्त हो चुकी चीज़ को वापस प्रयोग या अस्तित्व में लाने का कार्य।

संस्कृत में पुनरुत्थान को (पुनरुत्थान , अभ्युथान) के रूप में लिया जा रहा है जिसका मतलब है **पुनरुद्धार और/या स्नान,**

i . किसी चीज़ को फिर से मज़बूत या पॉपुलर बनाने या बनने का काम,

ii. किसी चीज़ को फिर से ज़िंदा करना, ठीक करना, या बचाना। इस शब्द का इस्तेमाल किसी व्यक्ति, चीज़ या किसी और चीज़ की हालत सुधारने या उसे पहले जैसी हालत में वापस लाने के लिए किया जा सकता है।

iii. खुद को धोने का काम,

iv. किसी विशेष घटना, कार्य का उदय, प्रारंभ या प्रगति

(4.2). अधर्म-अधर्मी:

प्रकृति का यह धर्म है कि वह बिना किसी भेदभाव के सभी को रहने के लिए हवा, पानी, आग, भौतिक पदार्थ और जमीन तथा खड़े रहने के लिए आसमान प्रदान करती है तथा जीवन को जारी रखने के लिए प्रकृति ने दिन और रात बनाए हैं। इसमें बीमार पड़ना, दूसरों के अनुभव को मान लेना, आपसी वाद-विवाद में किसी पर विश्वास कर उससे मध्यस्थता करवाना, न्याय पाना, सामान्य विचारों और समाचारों का आदान-प्रदान करना, एक-दूसरे का सम्मान करना, प्रकृति में परखे और चखे हुए (अनुभव किए हुए) अनुभव पर भरोसा करना और उस पर चलना एक स्वाभाविक प्रक्रिया मानी जाती है और इसे प्राकृतिक धर्म भी कहा जाता है। यदि कोई इस प्राकृतिक धर्म को मानकर जुआ खेलता है तो वह जानता है कि जीतने या हारने की कोई भी संभावना हो सकती है और इस प्रकार जुआ खेलना एक स्वाभाविक प्रक्रिया मानी जाएगी। लेकिन यदि इस जुए में कोई बीच में पासा बदल दे या ताश के पत्तों के साथ धोखा करे तो यह अधर्म हो जाता है और ऐसा करने वाला भी अधर्म है।

इसी तरह, बीमार पड़ना एक नेचुरल प्रोसेस है और जब कोई बीमार पड़ता है, तो वह डॉक्टर या वैद्य के पास जाता है और उनसे इलाज करवाता है, डॉक्टर को पैसे देता है, यह भी एक नेचुरल प्रोसेस माना जाता है। इसके अलावा, डॉक्टर-वैद्य को हर सुबह भगवान से प्रार्थना करनी चाहिए कि हमारा काम चलता रहे, यानी बीमार हमारे पास आते रहें, हमसे इलाज करवाते रहें, हमें पैसे देते रहें, और हमारा खर्च उठाते रहें। यह भी एक नेचुरल प्रार्थना है। लेकिन अगर डॉक्टर, दवा बेचने वाला, दवा बनाने वाला, लोगों के लिए रुकावटें खड़ी करने लगे, गलत सलाह देने लगे जिससे वे बीमार पड़ते रहें और बीमार पड़ते रहें, या लोगों में ऐसे कीटाणु छोड़ दे जिससे लोग बीमार पड़ें और परेशान हों, फिर उसी बीमारी का प्रचार करे, उसका डर पैदा करे, उसके लिए न्यूज़ मीडिया का इस्तेमाल करे, डॉक्टरों के बीच उसकी चर्चा करवाए और ऐसा माहौल बनाए कि लोग बीमार पड़ें या न पड़ें, समाज और सरकार बचाव के तौर पर ढेर सारी दवाइयाँ खरीद ले, यह एक गलत प्रोसेस है और ऐसा करने वालों को गलत या शैतान कहा जा सकता है। पिछले सौ सालों में स्पैनिश फ्लू, सार्स, चिकनगुनिया, स्वाइन फ्लू, जीका, इबोला, कोरोना वायरस जैसी कुछ बीमारियाँ हमारे बीच फैलीं और डायबिटीज, दिल की बीमारी, कैंसर को बहुत ज़्यादा प्रचारित किया गया, जो शैतानियत की हद दिखाता है।

इसी तरह, अगर अंडरवर्ल्ड का कोई आदमी किसी को मारने का कॉन्ट्रैक्ट लेता है, तो इसे अंडरवर्ल्ड का एक नेचुरल प्रोसेस माना जाता है, लेकिन अगर अंडरवर्ल्ड का कोई आदमी ऐसा माहौल बनाने लगे कि लोग उसे हर दिन किसी को मारने का कॉन्ट्रैक्ट दें, तो यह प्रोसेस अंडरवर्ल्ड के माने हुए नियमों के खिलाफ हो जाता है और इसे गुंडागर्दी या शैतानियत कहा जाता है।

आज जब हेल्थ, एजुकेशन, जस्टिस और कम्युनिकेशन के फील्ड में ऐसा माहौल बन गया है, तो हम हालात की गंभीरता का आसानी से अंदाज़ा लगा सकते हैं कि अब ज़िंदगी मुश्किल हो गई है। यह सब अधर्म के अंदर आता है - और कहा जा सकता है कि जो लोग ऐसा करते हैं वे अननैचुरल - अनराइटियस हो गए हैं।

अगर हम इसे और भी आसान शब्दों में कहें, तो अगर कोई कफ़न, ताबूत बनाने, श्मशान घाट पर लकड़ी बेचने का काम करता है, जो ज़रूरी और नैचुरल है, और इसके साथ ही, अगर ऐसा काम करने वाला इंसान अपने बिज़नेस को चलाने और बढ़ाने के लिए भगवान से प्रार्थना करता है, तो यह अजीब लग सकता है, लेकिन फिर भी जायज़ है। लेकिन अगर ऐसे बिज़नेसमैन लोगों को मारने या मरवाने की प्लानिंग करने लगे, तो हम क्या कहेंगे? वे अपना होश खो चुके हैं और अधार्मिक और शैतानी हो गए हैं। ऐसा माना जाता है कि जो कोई भी माने हुए नियमों से भटक जाता है, उन्हें तोड़ता है, उसका अंत पक्का है। इस तरह, अधर्म और अधर्मियों का अंत पक्का है, अब देखना यह है कि यह कब होता है, कैसे होता है और कौन-कौन करता है।

(4.3). धर्म वह जो समाहित करता है वह धर्म है, या धर्म पूरी पृथ्वी का सार है (ऐसा माना जाता है) यह है धर्म , धारा का मर्म धर्म संस्कृत में वे कहते हैं, संसार (दुनिया-पूरी धरती-धारा) के लिए यह सनातन धर्म है, जबकि धर्म धर्म का क्षेत्रीय रूप है, 'जैसे; हिंदुस्तान के लिए यह हिंदू है, यहूदा के लिए यह यहूदी धर्म है (यहूदियों के लिए जेरुसलम)। बौद्ध, जैन और सिख हिंदू के मुख्य रूप हैं जबकि ईसाई, मुस्लिम और बहाई यहूदियों के मुख्य रूप हैं (धर्म) पूरा पकड़ना का और धर्म क्षेत्र का)।

धर्म अपनी सारी उदारता के साथ स्वतंत्रता और प्रेम के गुण पर खड़ा है, न कि भूत-प्रेत और नरक का डर पैदा करने या खुलेआम डराने-धमकाने और जनता में जेल की सजा देने के कारण, जैसा कि कई धर्म कर रहे हैं। धर्म संपूर्ण है और जीवन में मिलने वाले सभी लेन-देन के प्रति समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है, यह न तो खुद को व्यापार में शामिल करता है और न ही व्यापारिक संस्थाओं का समर्थन/पक्ष लेता है, साथ ही यह राजनीतिक या शासक या विस्तारवादियों का गुर्गा, प्रचारक या अग्रिम संगठन नहीं बनता है। धर्म कभी किसी को यह वर्दी पहनने या वह बाल कटवाने के लिए नहीं कहता, 'यह पढ़ो और वह देखो', 'व्यायाम (योगिक या एरोबिक) करते समय उपदेशों को रटने के लिए नहीं कहता

धर्म कभी किसी को भगवान को खुश करने के लिए इंसानों या उनकी चीज़ों जैसे नारियल या बकरी, भैंस, भेड़, ऊँट वगैरह की बलि देने के लिए नहीं कहता। धर्म कभी किसी को बैल और भैंसे को बधिया करने या लड़कों का खतना करने या लड़की के प्राइवेट पार्ट को काटने के लिए नहीं कहता, किसी भी वजह से, जिसमें उन्हें ब्रह्मचारी बनने के लिए मजबूर करना भी शामिल है, या उन्हें (लड़के और लड़कियों को) पूरी तरह से बलि से बचाने के लिए नहीं कहता, उन्हें एक ऐसी चीज़ बनाकर और घोषित करके जो पहले से ही भगवान को सिंबॉलिक रूप से बलि दी जा चुकी है।

धर्म किसी को भी किसी की गोथ पर रोक लगाने के लिए नहीं कहता, चाहे वह इंसान हो या पेड़ और उन्हें बौना या बोनसाई बना दे। धर्म बस हमसे कहता है कि हम ज़िंदगी का जश्न मनाएं और दूसरों को भी जश्न मनाने दें और वही खाएं जो आपके मूड को ठीक रखे और वही पिएं जो आवाज़ को ठीक रखे। धर्म कभी किसी को पूजा करने के लिए नहीं कहता और न ही धर्म किसी को किसी भी तरह या किसी रूप (मूर्ति) या निराकार की पूजा करने या खुद की पूजा करवाने पर रोकता है, धर्म बस अपने अंदर की आस्था/चेतना के हुक्म को मानने और अपना काम-कर्म करते रहने के लिए कहता है (यह भी कह सकते हैं; काम ही धर्म है और काम ही पूजा है)। धर्म के लिए इंग्लिश में कोई सटीक शब्द नहीं है; इसलिए धर्म शब्द का इस्तेमाल किया जाता है।

पूरी दुनिया एक है लेकिन एक बड़ा परिवार, यह धर्म की सबसे बेसिक समझ है, जिसे अब तक कई धर्म पहले मानने में हिचकिचाते थे, जब तक कि वे सभी धर्मों और रंगों के लोगों को अपने धर्म को मानते हुए न देख लें। अब, बीमारी फैलने और दुनिया भर में लॉकडाउन ने बिना किसी शक के यह साबित कर दिया है कि दुनिया एक है, अगर दुनिया एक नहीं होती, तो एक बीमारी धरती पर पूरी बिरादरी को कैसे प्रभावित कर सकती थी।

(4.4). धर्म-संस्थान (धार्मिक संस्थाएँ): धर्म-संस्थान एक ऐसी संस्था है जो बिना किसी भेदभाव के, आत्मनिर्भर तरीके से पूरे समाज की ज़रूरतों को पूरा करती है। ऐसे आत्मनिर्भर धर्म-संस्थान (धार्मिक संस्थाएँ) सदियों से लगातार (हमेशा के लिए) काम करते रहे हैं। असल में, इस सिस्टम के लगातार काम करने की वजह से, इस सिस्टम को ही सनातन नाम दिया गया है। इसके अलावा, क्योंकि इन संस्थानों का काम पूरी धार्मिकता के साथ होता देखा गया है, इसलिए इसे सनातन धर्म का निकनेम दिया गया है। हालाँकि, कुछ लोग कहते हैं कि इसका उल्टा यह है कि हमेशा रहने की बेसिक समझ की वजह से ये संस्थान लगातार काम कर सके।

धर्म संस्थान को एक ऐसी संस्था कहा जा सकता है जो भूखे को खाना, प्यासे को पानी, बेसहारा को रहने की जगह, बीमार को इलाज, ज़रूरतमंद को सलाह और इन्साफ़, लाचार को मदद, युवाओं को

नौकरी और अकेले और बुजुर्गों को इज्जतदार माहौल देगी। साथ ही, यह अपने आस-पास के सभी लोगों को एक ऐसे माहौल में शारीरिक, आर्थिक और भावनात्मक सुरक्षा देगी जहाँ उनका शोषण न हो, ताकि कोई बेसहारा न रहे, ज़बरदस्ती भीख न मंगवाए और ज़बरदस्ती प्रॉस्टिट्यूशन न हो।

संस्था के लंबे समय तक सफल ऑपरेशन के बाद जो साफ़ तौर पर संतुष्टि दिखती है और परफ़ेक्शन को भी बेहतर बनाने की बेवकूफी भरी इच्छा के कारण, समाज का अपने ही ऐसे संस्थानों में योगदान कम होता गया, जिससे धीरे-धीरे, पिछले तीन हजार सालों में ऐसे संस्थान खत्म ही हो गए। ये सभी धर्म - हिंदू, पारसी, यहूदी, बौद्ध, जैन, ईसाई, इस्लाम, सिख, बहाई, हर कोई खुद को कितना भी होलिस्टिक होने का दावा करे, लेकिन सच तो यह है कि इनमें से कोई भी धर्म अपने मानने वालों को भी, बराबर प्लेटफ़ॉर्म पर, सस्टेनेबल तरीके से हेल्दी और खुशहाल लाइफ़स्टाइल नहीं दे पाया है, इसलिए धर्म संस्थान को फिर से शुरू करना ही एकमात्र ऑप्शन कहा जा सकता है ताकि धरती पर जीवन एक बार फिर से ज़िंदा हो सके।

(4.5). राजनीति-पॉलिटिक्स: राजनीति शासन का एक एथिक्स है और एथिक्स के आधार पर सरकार का काम करना भी, जबकि एथिक्स वह है जो धरती और उसके पर्यावरण से निकलती है (नीति) नियामक से आती है) .

जैसे समय के साथ एनवायरनमेंट बदलता रहता है, वैसे ही एनवायरनमेंट को एक डायनामिक एंटीटी कहा जा सकता है। एनवायरनमेंट की तुलना में पृथ्वी को एक स्टैटिक एंटीटी कहा जा सकता है। क्योंकि राजनीति पृथ्वी के साथ मजबूती से जुड़ी हुई है, इसलिए राजनीति को स्टैटिक कहा जा सकता है, लेकिन क्योंकि राजनीति एनवायरनमेंट के साथ भी गूँजती है, इसलिए राजनीति भी एक डायनामिक बन जाती है।

इस मिक्स को देखते हुए, राजनीति को एक ऐसा अनुभव और उसकी अभिव्यक्ति कहा जाता है जो मजबूती से टिकी हो, फिर भी काफी लचीली हो। इस परिभाषा को देखते हुए यह समझा जा सकता है कि राजनीति कोई नौकरी/पेशा नहीं है, बल्कि समाज और उसके आस-पास के माहौल की भलाई के लिए समाज के प्रति एक जुड़ाव है। ऐसी राजनीति उन लोगों द्वारा की जा सकती है जिनकी बुनियादी पारिवारिक ज़रूरतों के लिए उनके समय और पैसे की ज़रूरत नहीं होती है, यानी ऐसे समय में जब उनके बच्चों की शादी हो जाती है, और ऐसी राजनीति में शामिल होना तब तक जारी रखा जा सकता है जब तक उनके बच्चे उनकी जगह लेने के लिए उपलब्ध न हो जाएं। इसका मतलब है कि एक एक्टिव राजनीति (वोटिंग के साथ-साथ चुनाव लड़ना) की उम्र लगभग पचास साल से पचहत्तर साल तक हो सकती है। पचहत्तर साल की उम्र के बाद ऐसे सम्मानित लोग आम तौर पर नए लोगों को पढ़ाने और ट्रेनिंग देने में शामिल होना चाहेंगे।

अंग्रेजी में राजनीति के लिए कोई सटीक शब्द नहीं है; इसलिए राजनीति शब्द का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

(5) धर्म का पुनरुत्थान क्यों और कैसे अत्यावश्यक हो गया;

इस सवाल पर गंभीरता से सोचा गया और विषय के बड़े दायरे को देखते हुए हमने इस मुद्दे पर चर्चा की ; (5.1). आम जनता में से समझदार लोगों के साथ, (5.2). बुद्धिजीवी लोगों के साथ चर्चा , (5.3). तथाकथित संतों और शैतान के संस्करण , (5.4). गुरु के साथ चर्चा , (5.5.i). आध्यात्मिक लोगों के साथ चर्चा: (5.5.ii). धर्म की पुनर्स्थापना के लिए प्रयास करते हुए 'बैल (नंदी)-गाय' का सम्मान वापस लाने की ज़रूरत; (5.6). कोरोना के फैलने और दुनिया भर में लॉकडाउन के दौरान बड़ी चर्चा ;

(5.1). आम जनता के बीच समझदार लोगों के साथ चर्चा

बेसिक सवाल यह उठता है कि हम भारत और दुनिया में हेल्दी और खुशहाल ज़िंदगी और लाइफस्टाइल कैसे जी सकते हैं और हमें अकेले और मिलकर ऐसी बुरी हालत में क्या करने की ज़रूरत है, जहाँ हर प्रॉब्लम (पॉल्यूशन, पॉपुलेशन, गरीबी, हेल्थ, एजुकेशन, जस्टिस, एंटरटेनमेंट, एम्प्लॉयमेंट, सही मदद और सलाह न मिलना, साथ ही कई डिशेज़ का ज़बरदस्ती इस्तेमाल और गैर-ज़रूरी और खतरनाक डिवाइस, जेनेटिक्स, रोबोटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) बड़ी होती जा रही हैं?

कि हम भारत और दुनिया में खुशी-खुशी कैसे रह सकते हैं, जबकि भारत और दुनिया की लीडरशिप को कुछ समझ नहीं आ रहा है, धर्मों ने इंसानियत को हल देने के बजाय, खुद कोरोना के आगे घुटने टेक दिए हैं और दुनिया भर में लॉकडाउन के दौरान अपने दरवाज़े बंद कर लिए हैं, खत्म हो गए हैं और उन्हें बेकार घोषित कर दिया है?

क्या कुछ मुट्ठी भर बिज़नेसमैन और उनके कठपुतली नेता, पैसे लेकर प्रचार करने वाले धार्मिक उपदेशक और कुछ भ्रष्ट सरकारी अधिकारी भारत और दुनिया में रहने की शर्तें तय करते रहेंगे?

क्या भारत जैसे देश में भी नंदी (बैल) को बधिया करना और गायों को मारना और गाय को माता कहने की इजाज़त दी जा सकती है (जो खुद हिंदू धर्म को मानने का दावा करता है, जो गायों के साथ क्रूरता करने वाले सभी कामों को रोकता है)।

क्या कोर्ट में पेंडिंग केस को इतनी हद तक बढ़ने दिया जा सकता है कि सोचा भी नहीं जा सकता और कानून-व्यवस्था को ऐसे ही चलने दिया जा सकता है? क्या चीज़ों, मेटल और करेंसी की कीमतों में अचानक बढ़ोतरी को सही ठहराया जा सकता है और कुछ लोगों को इसे चलाने दिया जा सकता है? सवाल यह है कि कब तक तथाकथित आयरन ट्रायंगल (अमीरों, राजघरानों और धार्मिक गुरुओं का गठजोड़) को अपने दिखावे से प्रकृति को खत्म करने और दुनिया पर राज करने दिया जाएगा, जो कायर, कई तरह के काम करने वाले और दोगले नेताओं के ज़रिए खुद को इंसानियत का मसीहा बताते हैं? क्या हमारी सभ्यता में खुशी कायम रह सकती है?

क्या समाज के लिए इससे बुरी हालत हो सकती है कि कम से कम एक उम्मीद न हो? मेडिकल डेटा इस बात को कन्फर्म करता है कि बीमारियाँ बहुत तेज़ी से बढ़ रही हैं, जो साफ़ तौर पर दिखाता है कि जिन एजेंसियों (धार्मिक संस्थाओं) को समाज में उम्मीद देनी चाहिए, वे अपने मानने वालों में उम्मीद जगाने में बुरी तरह फेल हो रही हैं।

शायद हालात की इसी गंभीरता की वजह से अलग-अलग धर्मों के बनाने वालों ने मिलकर सोचा कि अभी का समय (बीसवीं सदी) या तो कयामत का समय होगा, या नए मसीहा का जन्म होगा, या बुद्ध का पुनर्जन्म होगा या भगवान के नए मैसेंजर का आना होगा या यह सिर्फ़ नए युग में बदलाव का समय है?

क्या ऐसी स्थिति में “धर्म (मूल धर्म) को फिर से ज़िंदा करना और धर्म संस्थान बनाना” परिवार, समाज और सरकार के सदस्यों के बीच इनकम/रिसोर्स/यील्ड और उससे जुड़ी ज़िम्मेदारी (काम का बंटवारा) का सही और लॉजिकल बंटवारा बनाए रखने के लिए लगातार काम करना एक काम का हल हो सकता है? क्या हमें धर्म को फिर से ज़िंदा करने और धर्म संस्थान बनाने के साथ-साथ बुराइयों को खत्म करने और सज्जनों और महिलाओं को ऊपर उठाने का प्रोसेस भी शुरू करने की ज़रूरत है?

ऐसे में गुरु उम्मीद की किरण दिखाते हैं और नीचे दिए गए दो हिस्से कोट करते हैं और कहते हैं कि किसी के भी मन में, चाहे वह कोई भी हो, नीचे दी गई बातों की सच्चाई को लेकर ज़रा भी शक नहीं होना चाहिए और जल्द ही सब ठीक हो जाएगा। वे कहते हैं - “अगर हम बड़े पैमाने पर गिरावट देख रहे हैं (खुद के साथ, दूसरों के साथ और प्रकृति के साथ अपने रोज़ाना के व्यवहार में) तो कोई भी यकीन कर सकता है कि बड़े पैमाने पर मंथन/बदलाव आने वाले हैं।”

(i) रामचरित मानस से प्रसिद्ध श्लोक/चौपाई:

“जब जब होई धरम की हानी, बाढ़हि असुर अधम अभिमानी।

तब - तब धारी प्रभु विविध शरीरा , हरहि दयानिधि सज्जन पीरा ॥ ”

"जब भी नेकी कम होती है, और घमंडी, बुरे राक्षस बढ़ते हैं, तो दया के सागर भगवान अच्छे लोगों के दुख दूर करने के लिए अलग-अलग रूप लेते हैं," यह बताते हुए कि जब बुराई बढ़ती है तो भगवान का अवतार बैलेंस बनाने के लिए आता है।

(ii) गीता का प्रसिद्ध श्लोक :

" कब कब नमस्ते धर्म का अफसोस है भारत में अधर्म का उदय यही आत्मा है मैं बना रहा हूँ ॥4 - 7॥

मोक्ष के लिए संतों का विनाश के लिए एफ शैतानी दस्तावेज। धर्म की स्थापना के लिए असंभव युगे युगे. ॥4-8 ॥ “

हे भारत (अर्जुन, बुद्धिमान, ज्ञानी, पूरी दुनिया), जब भी धर्म की ग्लानि (दोष/गिरावट/उदासी/आराम/पछतावा) होती है, तो मैं धर्म की बहाली के लिए, साधुओं (सज्जनों) की रक्षा के लिए, दुष्टों/बुरे काम करने वालों के विनाश के लिए खुद को फिर से जन्म देता हूँ और युगों-युगों तक धार्मिक संस्थाओं की स्थापना को संभव बनाता हूँ। भारत शब्द का ज़िक्र अर्जुन, बुद्धिमान, ज्ञानी और महान भारत के वंशज धरती के लिए किया गया है। यहाँ (गीता में) इस ज़मीन के टुकड़े के लिए भारत शब्द का इस्तेमाल नहीं किया गया है, जिसे अब भारत-हिंदुस्तान भी कहा जाता है।

* नोट: ऊपर दिए गए दोनों हिस्सों में सिर्फ धर्म शब्द का इस्तेमाल हुआ है, बिना किसी प्रीफ़िक्स या सफ़िक्स के और यह बात कम से कम उन लोगों को ध्यान में रखनी चाहिए जो इन धर्मग्रंथों को मानते हैं।*

इस लेटर का सब्जेक्ट ऊपर दिए गए सवालों के बैकग्राउंड पर चुना गया है।

(5.2). बुद्धिजीवी लोगों के साथ चर्चा :

जब हम ऊपर दिए गए मुद्दों पर समझदार लोगों से बात करते हैं, तो ये बातें सामने आती हैं: सिस्टम करप्ट हो गए हैं, और ये करप्ट सिस्टम अंदर तक सड़ चुके हैं, और यह लंबे समय से चल रहा है। नतीजतन, जनता ने उन्हें मान लिया है, और कहीं न कहीं, जनता भी करप्ट हो गई है।

आज दुनिया एक चौराहे पर खड़ी है, कई बार खुद का सामना कर रही है, एक तरफ उसका अपना विश्वास है और दूसरी तरफ सच्चाई है। "डेमोक्रेसी उन सभी बीमारियों का इलाज है जिनसे हम परेशान हैं और एक बार जब हम इसे अपना लेंगे, तो हम एक ऐसा समाज बना लेंगे जो सभी के लिए आज़ाद, निष्पक्ष और काबिल होगा" यह एक आम विश्वास है, यह पश्चिम की तरफ से एक ज़ोरदार ऐलान है, फिर भी इसकी कामयाबी पर सवाल है, मुश्किल वर्ल्ड वॉर, कोल्ड वॉर और सिविल वॉर से बचने के

मामले में नहीं, बल्कि जो इसका मकसद था - आज़ादी, बराबरी और खुद को पाना - उसे पाने के मामले में।

वोट देते समय डेमोक्रेसी को लोगों की, लोगों के द्वारा और लोगों के लिए सरकार बताया जाता है, लेकिन इसके बाद डेमोक्रेसी "सरकारी कर्मचारियों की, सरकारी कर्मचारियों द्वारा और सरकारी कर्मचारियों के लिए सरकार" या "अमीरों की, अमीरों द्वारा और अमीरों के लिए सरकार" जैसी लगती है, जिसमें चुने हुए नेता, सांसद (MP) एक फालतू और गैर-ज़रूरी रुकावट लगते हैं? अगर जनता ने MP को वोट दिया है तो उन्हें हर तरह के काम के लिए उनके पास आना चाहिए, लोगों को सरकारी कर्मचारी के पास जाने की क्या ज़रूरत है, चाहे वे एडमिनिस्ट्रेशन में हों या ज्यूडिशियरी में? इसके अलावा, देश में इतने सारे चुनाव और इतने सारे नेता हैं कि जो अधिकारी सच में काम करना चाहते हैं, उन्हें समझ नहीं आता कि किसकी सुनें और किसकी नहीं?

लोगों की कमाई का 60 से 70 परसेंट हिस्सा पढ़ाई, हेल्थ, इंसाफ़ और ट्रांसपोर्ट पर खर्च होता है और ये सर्विस हर साल न सिर्फ़ महंगी होती जा रही हैं बल्कि शोषण करने वाली भी होती जा रही हैं। गरीबों का पैसा बैंकों के क्रेडिट कार्ड से लूटा जाता है, जबकि अमीरों को फ़ायदा होता है; प्राइवेट साहूकारों का बर्ताव भी बहुत बुरा है। हवा, पानी और ज़मीन के प्रदूषण की वजह से हालात बहुत खराब हैं। पानी, जंगल, ज़मीन और जंगली जानवरों की हालत बहुत खराब हो गई है; एनवायरनमेंट बर्बाद हो गया है।

जातिवाद बना हुआ है, और धार्मिक झगड़ों और दंगों से समस्याएँ और बढ़ गई हैं। बहन-बेटियाँ सुरक्षित नहीं हैं, और न्याय नहीं मिल रहा है, अन्याय बढ़ रहा है, गरीबी बढ़ रही है, अमीर-गरीब के बीच का अंतर बढ़ रहा है, देश की करेंसी कमज़ोर हो रही है, और भिखारियों, किडनैपिंग और ह्यूमन ट्रैफ़िकिंग की संख्या बढ़ रही है और अच्छे कामों के लिए मिलने वाला सहयोग लगभग खत्म हो गया है। कुल मिलाकर, जनता का इस डेमोक्रेटिक सिस्टम और नेताओं के वादों से इतना भरोसा उठ गया है कि अब वे वोट देते समय नेताओं से सीधे पैसे या सामान माँगते हैं।

डेमोक्रेसी का सिस्टम (बहुत चालाकी से चालाकी के उस्तादों ने) लॉलीपॉप की तरह डिज़ाइन किया है ताकि जो लोग राज करते हैं, वे आम लोगों को चूसते रहें। इंग्लैंड में डेमोक्रेसी का फ्रेमवर्क/स्ट्रक्चर (जो अब पूरी दुनिया में आम है) इस तरह से बनाया गया था कि राज्य के ये तीन पिलर एक आयरन ट्राइंगल बनाते हैं जो कम से कम पिछले नौ सौ साल से (जब से डेमोक्रेसी बनी और लागू हुई थी, तब से) टिका हुआ है (चाहे कोई भी पार्टी चुनाव जीते और कोई भी उनका लीडर और प्राइम मिनिस्टर बने, यह अटूट रहता है):

(i) मीडिया (कम्युनिकेशन का ज़रिया) - मीडिया को रोज़ पुलिस और हॉस्पिटल से जानकारी मिलती है - जिससे समाज में डर बना रहे), माहौल बनाने के लिए, अलग राय रखने वालों को दबाने के लिए, निराशा फैलाने के लिए, अफ़रा-तफ़री मचाने के लिए, और जनता को नीचा दिखाते हुए सरकार को ऊपर उठाने के लिए (मीडिया कभी भी ज्यूडिशियरी, एडमिनिस्ट्रेशन, आर्मी या राजा/प्रेसिडेंट का मज़ाक नहीं उड़ाता; यह सिर्फ़ पॉलिटिकल लीडर्स, यहाँ तक कि प्राइम मिनिस्टर का भी मज़ाक उड़ाता है - इस तरह जनता का मज़ाक उड़ाता है।

(ii) प्रशासनिक व्यवस्था - अधिकारी, कर्मचारी, पुलिस एवं सेना।

(iii) न्याय व्यवस्था - हमेशा जनता की पहुँच से बहुत दूर और राज्य के राजा/राष्ट्रपति/राज्य प्रमुख के नियंत्रण में रहती है।

इसके अलावा, आम लोगों के बीच मौजूद यह आयरन ट्रायंगल इंग्लैंड में राजशाही, अमीर लोगों और धार्मिक नेताओं के बीच बने आयरन ट्रायंगल का नतीजा है। यह ऊपरी आयरन ट्रायंगल दुनिया भर में काम करता है और निचला आयरन ट्रायंगल जो देश के लेवल पर काम करता है, पूरी दुनिया में फैल गया है और अब तबाही मचा रहा है।

स्थिति बहुत गंभीर है - और इससे ध्यान भटकाने के लिए, सरकार और कुछ बड़ी मल्टीनेशनल कंपनियाँ एक तरफ़ शराब, स्मोकिंग, ड्रग्स और पोर्नोग्राफी को बढ़ावा देती हैं, उनसे फ़ायदा उठाती हैं, और दूसरी तरफ़, वे इस मुनाफ़े का एक हिस्सा इन्हीं बुराइयों के खिलाफ़ कैंपेन और नैतिकता को बढ़ावा देने पर खर्च करती हैं - जिससे लोगों में नाराज़गी बढ़ती है और लोग अपनी परेशानियाँ भूलने के लिए वापस नशे की लत की ओर बढ़ते हैं, इस तरह यह बुरा चक्र चलता रहता है।

तो, आगे का रास्ता क्या है? ऐसे ही घुटते-घुटते और मरते रहना, या कोई और रास्ता है? क्या हम कभी बेसिक ज़रूरतों, शिक्षा, हेल्थकेयर, न्याय और सुरक्षा का ठीक से इंतज़ाम कर पाएँगे? इसके लिए बड़े पैमाने पर कोशिशों की ज़रूरत है जो सिर्फ़ केंद्र या राज्य लेवल पर या ज़िला प्रशासन में पॉलिटिकल पावर में बदलाव से नहीं हो सकतीं - कई सिस्टम में बदलाव ज़रूरी होंगे और उन्हीं लोगों को अपने दायरे से बाहर निकलकर काम करना होगा और सहयोग करना होगा और बड़े बदलाव लाने होंगे, यानी बेसिक चीज़ों/धर्म को फिर से ज़िंदा करना होगा।

5.3). तथाकथित संतों और शैतान के वर्जन

(5.3.i). भगवान में विश्वास करने वाले कहते हैं कि अभी का समय बदलाव का समय है। पाप का घड़ा लगभग भर चुका है और फटने वाला है और उसके बाद सत्य युग आएगा। ऐसे प्रवचनों में आसानी से सुना जा सकता है कि पाप का घड़ा फट जाता है जबकि पुण्य के गमले में नया पौधा उगता है।

संतों को लोगों को दिलासा देते हुए, उन्हें प्यार भरे अंदाज़ और खुशनुमा लहजे में यह कहते हुए सुना जा सकता है कि सच्चाई का युग (सत्ययुग) आने वाला है, जिसमें हर कोई हेल्दी, खुशहाल और पवित्र जीवन जिएगा। वे कहते हैं कि सत्ययुग में धरती पर कुल 33 करोड़ लोग होंगे, जिसमें हर कोई देवता की तरह होगा और उसके पास बहुत सारी ताकत और साधन होंगे।

इसके अलावा, संतों को यह कहते हुए सुना जा सकता है कि अभी का समय बुरी ताकतों के सामने आने और उन्हें खत्म करने, और अच्छाई के आने और आगे बढ़ने का है, और हिसाब-किताब/चीजें उम्मीद से जल्दी सुलझ जाएंगी, इसलिए जो लोग दिल से और अपने व्यवहार से अच्छे हैं, उन्हें ज़्यादा परेशान होने की ज़रूरत नहीं है और जनता से बस इतना ही चाहिए कि वे अपना काम करते रहें और भगवान से प्रार्थना करें और आपकी कृपा बरसने का इंतज़ार करें।

(5.3.ii). दूसरी तरफ, अंडरवर्ल्ड के वो लोग जो अपनी ताकत पर भरोसा करते हैं, कहते हैं कि भगवान तो हैं, लेकिन भगवान सिर्फ़ उन्हीं के पास हैं जिनके पास ताकत, पावर, दौलत (पैसा, रिसोर्स) है, और जो दौलत के तरीकों (मीडिया, पैसा, मार्केट, बैंक) को कंट्रोल करते हैं। इनर सर्कल के ये लोग संतों और साधुओं को बेकार के बेवकूफों का ग्रुप कहते हैं। आजकल इनके बीच यह आम चर्चा है कि धरती इतनी बड़ी आबादी का बोझ नहीं उठा सकती, कि गाजर-मूली की तरह बढ़ती इस आबादी ने इतनी गंदगी और बकवास फैला दी है और खत्म होते कुदरती रिसोर्स पर इतना बोझ डाल दिया है कि आराम से रहना मुश्किल हो गया है और ऐसे में यह हम सबकी भलाई में होगा कि हम इस तेज़ी से बढ़ती सात-आठ अरब आबादी में से एक बड़ा हिस्सा (लगभग अस्सी से नब्बे परसेंट) खत्म कर दें ताकि बाकी आबादी कम से कम ज़िंदा रह सके।

इस अंदरूनी घेरे में लोग कहते हैं कि अगर इंसानों ने मुर्गियां, अंडे, बकरियां और मछली नहीं खाई होतीं, तो ये सभी पूरी धरती पर फैल गए होते। प्रकृति में एक जीव दूसरे का भोजन होता है (जीव - जीवस्य भोजनम् - जीवन जीवन को खाता है), लेकिन इंसानों ने खुद को घटनाओं से ऊपर उठा लिया है और कोई भी इंसान इंसानों को खाता हुआ नहीं मिला, इसीलिए इंसानों की आबादी इतनी बढ़ गई है। अगर इस इंसानी प्रजाति में थोड़ी भी समझदारी होती, तो यह अपनी आबादी को कंट्रोल कर लेती, लेकिन उनमें से ज़्यादातर पागल हैं—उनके धर्म और धार्मिक नेता सब पागल हैं; वे अपनी आबादी बढ़ाते रहते हैं। क्योंकि पागल लोगों की यह प्रजाति सुधरने वाली नहीं है, इसलिए अगर धरती को बचाना है, तो इन पागल लोगों को खत्म कर देना चाहिए। आप ऐसी चर्चाएँ न्यूज़, मीडिया, सोशल मीडिया और फिल्मों में आसानी से सुन और देख सकते हैं।

ताकतवर लोगों के बीच ऐसी बातचीत से, यह नतीजा निकाला जा सकता है कि सिर्फ़ वही लोग ज़िंदा रहने के हकदार हैं जिनके पास पैसा है, जो काबिल और ताकतवर हैं; बाकी सबको मर जाना चाहिए या

कीड़े, मच्छर, मछली या मुर्गियों की तरह मारे जाने के लायक होना चाहिए। भूकंप, ज्वालामुखी, तूफान, चक्रवात, बाढ़ और सूखे की संख्या में बढ़ोतरी और फिर सार्स, कोरोना जैसी बीमारियों का फैलना, जिन्हें इस दिशा में की गई कुछ कोशिशें माना जा सकता है।

टिप्पणी

स्थिति तब गंभीर मानी जा सकती है जब अंडरवर्ल्ड के दो विरोधी गुट लगभग एक ही तरह के भविष्य की ओर इशारा करते हैं। हैरानी की बात है कि यह सोच अलग-अलग धर्मों में चल रही भविष्यवाणियों से मेल खा रही है, जैसे; ' पगम्बर साहिब के चौदह सौ साल बाद दो दूत आएंगे, और दुनिया में शांति स्थापित करेंगे', या यह बदलाव का समय है, या यह धर्म पच्चीस सौ साल तक चलेगा (बौद्ध धर्म), या यह प्रलय दो हजार साल बाद आएगा (ईसाई), या यह आखिरी पीढ़ी है (यहूदी), या यह बदलाव का समय है या कलयुग का अंत और नए युग के आने का समय है और इस तरह और ज़्यादा चिंताएँ पैदा होती हैं?

(5.4). मास्टर के साथ चर्चा

जब हम मास्टर के साथ उपरोक्त मुद्दों पर चर्चा करते हैं तो निम्नलिखित बातें सामने आती हैं;

(5.4.i). व्यक्ति के जीवन में सात सुख बताए गए हैं- पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख माया पास, तीसरा सुख अच्छी पत्नी, चौथा सुख आज्ञाकारी पुत्र, पांचवां सुख घर में गाय का रहना, छठा सुख सज्जन पुरुष के साथ रहना, सातवां सुख सुखद मृत्यु। इसके विपरीत कहा जाता है कि यदि शरीर बीमार हो, धन न हो, पत्नी नटखट हो, पुत्र आज्ञा न माने, घर में आय का कोई स्रोत न हो, आस-पड़ोस में अच्छे लोग न हों और मृत्यु में कठिनाई हो। आज हम पूरी दुनिया को देखें तो पहला, छठा और सातवां सुख खतरे में पड़ गया है, बाकी सुख भी टुकड़ों-टुकड़ों में नजर आते हैं- और फिर जब पूरी दुनिया में ऐसा व्यक्ति मिलना कठिन हो तो कहा जा सकता है कि स्थिति भयानक है।

(5.4.ii). अभी का युग कलियुग है, लोग आज के युग को कलियुग कहते हैं। कुछ इसे अंधेरे का युग कहते हैं, कुछ इसे मशीनों (पार्ट्स और कंपोनेंट्स) का युग कहते हैं, और कुछ इसे काली या देवी काली का युग कहते हैं - और वे कहते हैं कि इस युग में काला रंग ज़्यादा होता है - जैसे न्याय और शिक्षा के सेरेमोनियल हॉल में काले कपड़े, किताबों, डॉक्यूमेंट्स और आर्टिकल्स की काले रंग में प्रिंटिंग, अंधेरे या रात के अंधेरे में पढ़ाई को बढ़ावा देना। कुछ और कहते हैं कि कलियुग में लोग हमेशा या तो कल या आने वाले कल (अतीत या भविष्य) की बात करते हैं, संस्कृत और हिंदी दोनों का मतलब (कल -

काल) होता है, लेकिन आज या वर्तमान की नहीं (वे कहते हैं कि यह युग अतीत या भविष्य में उलझा हुआ है); कुछ कहते हैं कि यह समय या मौत का युग है, और महाकाल - शिव का - काली का युग है।

कहा जा रहा है कि कलयुग में, व्यापारियों, बिज़नेसमैन और इंडस्ट्रियलिस्ट को दूसरे क्लास (जैसे ब्राह्मण, पुजारी, बुद्धिजीवी, रिसर्चर, पॉलिटिशियन, पुलिस और आर्मी, प्रोफेशनल और सर्विस प्रोवाइडर) पर बढ़त मिलेगी और उन्हें समाज को लीड करने दिया जाएगा और जब भी यह व्यापारी क्लास कमज़ोर या शक वाला हो जाएगा, तो राज्य/सरकार के नौकर इस कमी को पूरा करेंगे या बढ़त हासिल कर लेंगे।

कहा जाता है कि कलियुग (जिसे रात, अंधकार या अंधेरे का युग माना जाता है) में ड्रग्स और नार्को सब्सटेंस का इस्तेमाल, चोरी-डकैती, प्रॉस्टिट्यूशन और पोर्नोग्राफी, और दूसरे सभी गलत काम जो सोचे जा सकते हैं, होने लगे हैं, जैसे मीडिया मैनिपुलेशन और आतंकवादियों को हथियार सप्लाई करना, वायरस से बीमारियां फैलाना, जंगलों में आग लगाना और करोड़ों जानवरों और पक्षियों को मारना और माइक्रोवेव से भावनाओं को मैनिपुलेट करके लड़ाई भड़काना।

इस हालात में, न सिर्फ नेचर का बैलेंस बिगड़ गया है, बल्कि धरती पर ज़िंदगी मुश्किल और नरक जैसी होती जा रही है। इससे पता चलता है कि हालात बहुत खराब हो गए हैं और ज़माने को बदलने का समय आ गया है। हालांकि, ऐसे हालात में बदलाव तो होना ही है, लेकिन सवाल यह उठता है कि बैंकिंग, मीडिया, तेल, कोयला और न्यूक्लियर एनर्जी, हथियार और गोला-बारूद, ऑटोमोबाइल, इंडस्ट्री या समुद्र और स्पेस के कंट्रोलर के माफिया की लॉबी को कौन लीड करेगा और उसका विरोध करेगा, और ज़रूरी बदलाव लाएगा।

लोगों में यह जानने की उत्सुकता है कि क्या भगवान लोगों की बुद्धि बदल देंगे, या भगवान बड़ी बाढ़ या युद्ध लाएंगे या फिर लोगों को बातचीत, विचारों पर मंथन करने के लिए प्रेरित करेंगे, जिससे सुधार और खुशी आएगी, जिसमें जो कुछ भी ज़रूरी है वह बचा रहेगा और जो कुछ भी गैर-ज़रूरी है वह खत्म हो जाएगा।

(5.5). आध्यात्मिक लोगों के साथ चर्चा

जब हम ऊपर दिए गए मुद्दों पर आध्यात्मिक लोगों से बात करते हैं, तो ये दो बातें सामने आती हैं; (5.5.i). कलयुग में पतन कैसे हुआ, इसकी कहानी, (5.5.ii). धर्म को फिर से ज़िंदा करने की कोशिश करते हुए 'बैल (नंदी)-गाय' की इज्जत वापस लाने की ज़रूरत;

(5.5.i). कलयुग में पतन कैसे हुआ, इसकी कहानी,

आध्यात्मिक दुनिया में कहा जाता है कि जैसे ही महाभारत खत्म हुआ, गांडीव (अर्जुन का धनुष और बाण) की ताकत भी खत्म हो गई, और जैसे ही भगवान कृष्ण चले गए, अंधेरा छाने लगा और डार्क-एज या ब्लैक-एज या कलयुग या मशीन-एज (काल-पुर्जा युग) या कलयुग या कल-कली का दौर शुरू हो गया। कलयुग के शुरू होते ही सभी ऋषियों ने अपने पैर पीछे कर लिए और खुद को अकेले में और प्रार्थना में लगा लिया।

डार्क एज की शुरुआत के साथ ही सभी नाइटी-आउल्स, बैटमैन, स्पाइडरमैन, शिकारी, लुटेरे, चोर, बहकाने वाली, जादूगर, डार्क वेब चलाने वाले, चालाक कलाओं, काले जादू और सूडो-साइंस के मास्टर, और दूसरे जीव और उपदेशक जो आम तौर पर अंधेरे में काम करते हैं, एक्टिव हो गए और उन्होंने अपनी गतिविधियां शुरू कर दीं और इसके साथ ही लोगों में धर्म के पालन में कमी आने लगी, जिसके कारण धर्म संस्थान की इज़्जत कम होने लगी।

आम लोग जो अंधेरे के असर में थे और जिन्हें संतों और महात्माओं से सही सुरक्षा और गाइडेंस नहीं मिली थी, वे आसानी से चालाक कलाओं और काले जादू के उस्तादों की तरफ खिंचे चले आते थे।

अंधकार युग का पहला असर तब दिखा जब लोग रोज़मर्रा की दुआओं से दूर, अंधकार युग से अंधे, सड़े हुए फलों और अनाज से बनी शराब के नशे में इतने बेपरवाह, बेइज़्जत और कमज़ोर हो गए कि वे बड़ों, पक्षियों और जानवरों, पेड़-पौधों, मछलियों और पानी के जीवों के प्रति इज़्जत और फ़र्ज़ नहीं निभा पाए, नतीजतन इनसे आपसी सहयोग छीन लिया गया और वे निराश हो गए।

निराश होकर लोग खुद को सुधारने के बजाय, ज़मीन से जुड़े रहे, पवित्रता को मानने और मूर्खता को ठुकराने के बजाय, अपने रोज़मर्रा के काम, खासकर खेती में सहयोग न करने की इस घटना को अपने तथाकथित दबदबे पर हमला समझ बैठे।

फिर संत के भेष में शैतान आता है जो लोगों को पालतू जानवरों को वश में करने, किसी भी तरह से पालतू जानवरों पर कंट्रोल करने की सलाह देता है, चाहे इसके लिए बछड़े को मारना पड़े या बैल को बधिया करना पड़े, उनकी नाक छिदवाकर उसमें धागा/रस्सी डालनी पड़े, बागियों पर हमेशा वज़न डालकर उन्हें कैद और कैद में रखना पड़े। दोस्तों के भेष में ये दुश्मन लोगों को आगे सलाह देते हैं कि इन्हें एक काम की चीज़ की तरह इस्तेमाल करें और इनका पूरा इस्तेमाल करें। संतों के भेष में ये शैतान, दोस्तों के भेष में दुश्मन लोगों को आगे सलाह देते हैं कि जानवर और सोना अपने पास रखना ताकत की निशानी है, अपने फायदे के लिए माहौल का इस्तेमाल करना चाहिए, और जिसके पास ये

ज़्यादा होंगे, वही ताकतवर होगा। इन सबने लोगों की सोच और उसके बाद के व्यवहार और काम में एक बड़ा बदलाव लाया है।

अपने फ़ायदे के लिए पर्यावरण का इस्तेमाल करने के इस विचार ने जानवरों, खासकर गायों पर बहुत ज़्यादा जुल्म किए हैं। बैलों को बधिया करके उन्हें बैल बनाना और खेती में गुलाम जानवरों की तरह इस्तेमाल करना, हमारे खाने और पीने वाले पूरे दूध में बैल और गाय का श्राप ले आया है।

इसे सबसे बड़ी हैरानी की बात कहा जा सकता है कि कैसे पूरी कम्युनिटी यह बेसिक बात भूल गई कि "यह खाना/दूध है जो मूड तय करता है और पानी जो आवाज़ तय करता है" और खुद को सबसे नीचे गिरा दिया/डाउनग्रेड कर लिया, वह भी भारत जैसे देशों में जो दावा करता है कि उसके आंगन में सबसे बड़ी और सबसे बड़ी समझदारी है। यह और भी हैरानी की बात है कि पिछले तीन हज़ार सालों में ज़्यादातर नए धर्म, जो इंसानी सोच को ऊपर उठाने की बात करते हैं, इस बहुत बेसिक मुद्दे पर चुप रहे कि ड्रिंक एंड डाइन, जो पूरे इंसानी मन और उसके डायनामिक्स को बदल देता है। अफ़सोस!

भारत के लिए गायों के प्रति यह फ़ायदेमंद व्यवहार इसलिए और भी हैरानी की बात है क्योंकि इसके ज़्यादातर लोग शिव के मंदिरों में नंदी (बैल) और गाय को माता मानते हैं। इसके अलावा, यह समझना भी बहुत अजीब लगता है कि गायों के प्रति असल ज़िंदगी में होने वाले इस जुल्म और क्रूरता को बहुत सारे पंडित, संत और साधु कैसे नज़रअंदाज़ कर देते हैं जो गायों और भगवान शिव और उनके दरबारियों के बारे में बोलते और मंत्रोच्चार करते रहते हैं। ऐसे उपदेशकों का अनादर, ऐसे समुदायों का गरीबी में रहना और ऐसे देशों की गुलामी, गायों के प्रति बुरे बर्ताव के स्वाभाविक नतीजे हैं।

जो लोग गाय का दूध पी रहे हैं और फिर बीफ़ खा रहे हैं, उनके बारे में कहा जा सकता है कि वे मशीनों की तरह बेपरवाह हो गए हैं और कहीं न कहीं उन्होंने खुद को मशीनों की तरह इस्तेमाल होने के लिए सरेंडर कर दिया है और इसमें कोई हैरानी की बात नहीं होनी चाहिए अगर ये भाईचारे और नरसंहार की ओर मुड़ जाएं।

गर्म रेगिस्तान या बर्फीले ठंडे माहौल वाले देशों में बीफ़ की बढ़ती खपत ने उन्हें भारत जैसे देशों में डेयरी बिज़नेस बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। इसके लिए वे सॉफ्ट लोन और दूसरी प्रमोशनल स्कीमें दे रहे हैं ताकि डेयरी प्रोडक्ट्स का ज़्यादा इस्तेमाल हो सके, ताकि बीफ़ की लगातार मांग पूरी हो सके। इसका नतीजा यह है कि दूध और चीनी वाली चाय और कॉफ़ी की खपत बढ़ गई है। इससे समस्या और बढ़ गई है और गायों के खिलाफ़ अपराध बढ़ गए हैं। इसके अलावा, सबसे उपजाऊ ज़मीन का 25 से

30 परसेंट हिस्सा घास, गन्ना, चाय और कॉफी की खेती के लिए इस्तेमाल होने लगा है, जिसे जंगलों की कटाई और उसके बाद क्लाइमेट चेंज और हर तरफ़ दुख का एक बड़ा कारण कहा जा सकता है।

ऊपर दी गई बातों को देखकर यह कहा जा सकता है कि इस कभी न खत्म होने वाली मंदी से उबरना मुमकिन है और इसकी शुरुआत हम जो खाना खाते हैं और जो लिक्विड पीते हैं, उसमें आसान सुधार से हो सकती है।

आध्यात्मिक लोगों का कहना है कि ऊपर लिखी बातें एक मृगतृष्णा, असंख्य या माया का असर हैं, वरना इतना आसान और छोटा काम इतने लंबे समय तक कैसे सफल नहीं हो पाता। आध्यात्मिक लोगों का कहना है कि सुबह होने वाली है और यह प्रार्थना, खुद को सुधारने, अपने खाने-पीने में सुधार, पूरी प्रकृति के प्रति अपने व्यवहार में सुधार का समय है और फिर मंथन के लिए तैयार हो जाओ ताकि जो भी बेवकूफी है उसे छोड़ दिया जाए और जो भी कीमती है उसे हमारी सामूहिक भलाई के लिए स्वीकार किया जा सके।

(5.5.ii). धर्म की पुनर्स्थापना के लिए प्रयास करते हुए 'नंदी'-गाय का सम्मान बहाल करने की आवश्यकता;

नीचे मास्टर्स और कई दूसरे लोगों के साथ 'बैल (नंदी)-गाय, बीफ़ की इकॉनमी और गायों और बधिया किए गए बैल की इकॉनमी' पर सवाल-जवाब के रूप में खास चर्चा दी गई है, जो भारत के साथ-साथ पूरी दुनिया के लिए इस मुद्दे की गंभीरता को दिखाती है और यह भी बताती है कि 'बैल (नंदी)-गाय' का सम्मान वापस लाना हमारी सबसे पहली चिंता क्यों होनी चाहिए:

सवाल: बीफ़ की कंटिन्यूटी के बारे में कोई कैसे भरोसा कर सकता है?

उत्तर: भारतीय उपमहाद्वीप, लैटिन अमेरिका और अफ्रीकी देशों में काफी गाय और भैंस हैं और वे बहुत सारा बीफ़ पैदा करते हैं और चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है।

सवाल: यह तो ठीक है, लेकिन कोई नहीं जानता कि अगर गायों की सप्लाई कम हो गई तो क्या होगा?

जवाब: वैसे तो चाय और कॉफी सादी ही पीनी चाहिए, लेकिन भारत जैसे देशों में दूध और चीनी मिलाकर इसे बढ़ावा दिया जाता है।

भारत जैसे देशों में, सादी चाय और कॉफी का मतलब है, चाय जिसमें चाय की पत्तियां/दाने, पानी, दूध और चीनी होती है और स्पेशल चाय का मतलब है उसमें इलायची, अदरक, तुलसी वगैरह डालना, इसी वजह से उन्हें दूध की बहुत ज़्यादा ज़रूरत बनी रहेगी, जिसका मतलब है कि गाय, भैंस, बकरी वगैरह की बड़ी संख्या होगी, जिसका मतलब है कि गाय और भैंसों की बड़ी संख्या में कमी आएगी ताकि वे बीफ़ की बढ़ती ज़रूरत को पूरा कर सकें।

इसके अलावा, हमें बीफ की सप्लाई पक्की करने के लिए हम यह पक्का करते हैं कि इन देशों में सिर्फ दूध वाली चाय और कॉफी का ही ऐड हो, फिर हम डेयरी इंडस्ट्री, चीनी इंडस्ट्री, चाय और कॉफी के बागानों को बढ़ावा देने के लिए सॉफ्ट लोन देते हैं, फिर हम इस बात पर ज़ोर देते हैं कि चीनी और डेयरी प्रोडक्ट पर सब्सिडी कितनी ज़रूरी है, ताकि ये प्रोडक्ट इन देशों के आम लोगों के लिए सस्ते रहें। फिर गायों के लिए चारा और घास पक्का करने के लिए हम खेती को बढ़ावा देते हैं, और हम यह पक्का करते हैं कि जब जंगल काटे जाएं या जंगल में आग लग जाए और वह राख हो जाए तो कोई ज़्यादा शोर न मचाए ताकि खेती और घास के मैदान के लिए ज़मीन बढ़ सके।

सवाल: अगर ऐसा है, तो हम सिर्फ बीफ खाने के लिए इतना पैसा लगा रहे हैं? क्या हम इस पैसे को वापस करने के लिए कुछ करते हैं?

जवाब: ओह! हाँ। यह आम बात है कि अगर कोई चीनी और दूध वाली चाय और कॉफी पीता रहता है, तो उसे कई हेल्थ प्रॉब्लम हो सकती हैं, जो मुंह की साफ़-सफ़ाई और पाचन के बिगड़ने से शुरू होती हैं। शरीर में ये दो ऐसी जगहें हैं जहाँ से सभी बीमारियाँ शुरू होती हैं। इसलिए यह पक्का है कि दूध और चीनी वाली चाय और कॉफी पीने वाले लगभग सभी लोगों को हेल्थ प्रॉब्लम होंगी और वे डॉक्टर के पास जाएँगे और दवाइयाँ खरीदेंगे। हमने अपनी तरफ़ से फ़ार्मास्यूटिकल कंपनियों की बड़ी ओनरशिप ले ली है और हॉस्पिटल की एक चेन खोली है, जिससे हमें भारत जैसे देशों में डेयरी और चीनी के बिज़नेस को बढ़ावा देने में किए गए इन्वेस्टमेंट से कहीं ज़्यादा बड़ा प्रॉफ़िट होता है।

इसके अलावा, हमने मीडिया में काफ़ी इन्वेस्ट किया है (अखबारों, न्यूज़ चैनलों और सोशल साइट्स में काफ़ी शेयर हैं) ताकि सिर्फ़ हमारी आवाज़ और भावनाएँ ही पहुँचें, न कि उनकी या किसी और की, जिससे हम भारत जैसे देशों में इतने पावरफ़ुल हो गए हैं कि हम न सिर्फ़ भारतीय लोगों पर उनकी सरकार के ज़रिए अपने टर्म्स एंड कंडीशंस थोप सकते हैं, बल्कि साथ ही पैसे भी कमा सकते हैं।

सवाल: ऐसा सुना जाता है कि भारत में कई लोग गायों को माता मानते हैं, इस मुद्दे को कैसे सुलझाया जा रहा है?

जवाब: हमने मदर डेयरी के आइडिया को बढ़ावा दिया है, और यह कि रोज़ कम से कम एक गिलास दूध पीना कितना अच्छा है, हम अपने बुद्धिजीवियों के ज़रिए उन्हें अंधा, डरपोक, कायर बनाए रखने के लिए सब कुछ करते हैं, अपने ही धर्मग्रंथों और लेखों की पकड़ में, जैसे, दूध अमृत है- सुधा, इसलिए उन्होंने सुधा डेयरी खोली, दूध अनमोल है: अमूल्य - अमूल डेयरी और एक नारा दिया अमूल दूध- भारत का स्वाद, इस तरह वे संतुष्ट और संयमित रहते हैं।

आपको हैरानी होगी कि कुछ तथाकथित ज्ञानी वक्ता गाय को अपनी माता कहते हैं (हालांकि वे बैल का ज़िक्र नहीं करते, जिसकी पूजा शिव के सभी मंदिरों में नंदी के रूप में की जाती है) लेकिन वे यह बेसिक

बात भूल जाते हैं कि दूध और चीनी वाली चाय और कॉफी बीफ का दरवाज़ा है और उन्हें दूध वाली चाय/कॉफी (नॉर्मल या आयुर्वेदिक) पीने/पीने और अपने प्रवचनों के दौरान उसे परोसे जाने से कोई दिक्कत नहीं होती।

जब चीनी और दूध वाली चाय और कॉफी घर पर महिलाओं, इंडस्ट्री में काम करने वालों और अधिकारियों, कॉर्पोरेट में क्लर्क और अधिकारियों, पब्लिक में फॉलोअर्स और नेताओं और धार्मिक उपदेशकों के लिए एक आम और वेलकम ड्रिंक बन जाए, तो बीफ की लगातार सप्लाई और बिज़नेसमैन को इससे मिलने वाले दूसरे सभी फ़ायदों का भरोसा किया जा सकता है।

सवाल: इसका मतलब है कि बीफ की कंटिन्यूटी बनाए रखते हुए कमाई भी हो रही है, क्या यह उनकी स्मार्टनेस और भारत जैसे देशों के लोगों और नेताओं की बेवकूफी नहीं लगती?

उत्तर: हा हा ,

सवाल: क्या होगा अगर भारतीयों को यह बात समझ में आ जाए?

जवाब: ऐसा नहीं है कि भारत और भारत जैसे देश में किसी को इसका एहसास नहीं है, लेकिन उनकी संख्या बहुत कम है और हर बार जब वे आवाज़ उठाते हैं तो उन्हें उनके ही साथी दबा देते हैं जिन्हें दूध और चीनी वाली चाय और कॉफी की लत लग गई है, जिन्होंने डेयरी के अलावा अस्पतालों और दवा कंपनियों से होने वाले मुनाफ़े को परखा है।

बीफ की सप्लाई ऐसे ही खत्म नहीं की जा सकती, अगर भारत जैसे देशों के पॉलिटिकल लीडर्स को बीफ बैन करने का मन भी हो, तो भी वे ऐसा नहीं कर पाएंगे, और ऐसा सिर्फ़ इसलिए है क्योंकि हमें देशों के अंदरूनी मामलों में दखल देने और जो चाहें वो पाने में काफ़ी महारत हासिल है, जो इन देशों के कई लीडर्स जानते हैं, इसलिए वे हमसे डरते रहते हैं और हमारे रास्ते में नहीं आते। हमारे लिए लीडर्स को गालियां देना, लोगों और उनके ग्रुप्स को लड़ाई-झगड़े, टकराव और युद्ध के लिए उकसाना सिर्फ़ एक नाटक है।

प्रश्न: क्या कोई ऊपर किए गए बड़े दावे का कोई उदाहरण दे सकता है?

उत्तर: हां, वे वहां हैं:

(a). उदाहरण के लिए, पॉलिटिकल सर्कल के ज़रिए यह बात फैलाई गई कि गायों को मुसलमान ही काट रहे हैं, और मुसलमानों में यह बात फैलाई गई कि ऐसा करना उनका बुनियादी अधिकार है, और इस तरह बीफ को लेकर एक ग्रुप बँट गया, जबकि सच यह है कि बीफ सप्लाई करने वाले ज़्यादातर ऑटोमैटिक स्लॉटरहाउस गैर-मुस्लिम कम्युनिटी द्वारा चलाए और उनके मालिकाना हक में हैं (उन कम्युनिटी के लोग भी शामिल हैं जो हर नियम और हर रूप में अहिंसा के लिए पूरी आवाज़ उठाते हैं)।

(b) भारत के सुप्रीम कोर्ट ने 1998 से 2005 तक अपनी लंबी सुनवाई में 2005 में गाय की रक्षा के लिए एक फैसला सुनाया, लेकिन सरकार में किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया।

(सी)। बैन लगाने का बिल संसद में तीन बार लाया जा चुका है लेकिन

(i) एक बार सरकार ने साल 2001 के आस-पास सुबह बिल पेश किया, लेकिन शाम को यह कहकर वापस ले लिया कि इस पर बाद में चर्चा की जाएगी।

(ii) एक और मौके पर, बीफ़ पर बैन लगाने वाला बिल पास होने ही वाला था कि एक महिला सांसद (जो हिंदू कम्युनिटी से होने का दावा करती हैं) ने कहा कि मैं बीफ़ खाती हूँ, इसलिए अगर बिल पास हो गया तो मेरी पसंद का खाना खाने के मेरे फंडामेंटल राइट का क्या होगा, और बिल ड्रॉप हो गया।

(iii) तीसरी बार जब बिल पेश किया गया, तो कोलकाता के हिंदू समुदाय के एक जाने-माने पत्रकार (जिन्होंने एक बार भारत के राष्ट्रपति चुनाव में अपना उम्मीदवार खड़ा किया था) ने लिखा कि वह बीफ़ खाते हैं और उनका और उनके जैसे लोगों का क्या होगा – इस बात का फ़िल्म इंडस्ट्री के कुछ लोगों (सभी हिंदू) ने सपोर्ट किया और बिल फिर से पास हो गया। तब से, हम कुछ आवाज़ें सुनते हैं लेकिन ऐसा कुछ भी ठोस नहीं है जिससे यह कहा जा सके कि बीफ़ पर बैन लगाने वाला बिल पार्लियामेंट में पेश किया जाएगा।

(d) स्पेन में बुल फाइटिंग के पूरे सेशन होते हैं, लेकिन भारत के तमिलनाडु के मीडिया ने इस पर एतराज़ जताया है।

(e). हम गाय की महिमा पर प्रवचन देते हैं, लेकिन बैल पर चुप रहते हैं; कोई भी गाय और बैल, भैंस और भैंस के बीच बढ़ती आबादी के अंतर, गाय और भैंस के नर बच्चों को कम उम्र में खाना देना बंद करके मारने, बैल और भैंस को कम उम्र में बधिया करने, गाय और भैंस को आसानी से मल्टिंग के लिए इंजेक्शन लगाने, गाय और भैंस की मल्टिंग के लिए मशीनों के इस्तेमाल और गाय और भैंस के आर्टिफिशियल इनसेमिनेशन पर बात नहीं करता।

(f). साल 2014 से सत्ता में बैठी मौजूदा सरकार बीफ़ से जुड़े सभी मुद्दों पर चुप है। हालांकि यह मौजूदा सरकार उस पॉलिटिकल पार्टी की है जो खुद को धर्म का रक्षक कहती थी, उसके नेता गाय को अपनी माता कहते हैं, शिव मंदिर में नंदी (बैल) की पूजा करते हैं, गाय बचाने के लिए ब्रिगेड को बढ़ावा देते हैं लेकिन जब बीफ़ एक्सपोर्ट साल दर साल बढ़ रहा है तब भी एक शब्द नहीं बोलते। हैरानी की बात है कि यह बात तो सामने आई कि गाय को काटा गया लेकिन यह बताया गया कि भैंस या भैंस का मांस काटा गया, क्योंकि गाय और भैंस के मांस में कोई अंतर नहीं होता इसलिए मुद्दा भटक जाता है।

* क्योंकि चिकन और मटन के लिए अलग-अलग नाम हैं, इसलिए यह साफ है कि भैंस और गाय के मांस में फ़र्क होना चाहिए। भैंस के मांस के लिए बीफ़ सही नाम हो सकता है, लेकिन गाय के मांस के लिए यह कैसे हो सकता है?*

सवाल: क्या ऐसा है? वे किस तरह के लोग हैं?

जवाब: आप अपना नतीजा खुद निकाल सकते हैं, पाखंडी या इमोशनली, मोरली, एथिकली ज़िंदा मरे हुए या जो भी आप चाहें।

ऐसा कहा जाता है कि ये लोग तब से पतित हो गए जब उन्होंने अधिकांश बैलों को नपुंसक बनाना शुरू कर दिया, जिससे संतान के लिए बहुत कम बचा, फिर ये लोग इन नपुंसक सांडों को - जिन्हें बैल कहा जाता है - खेती और परिवहन में उपयोग करना शुरू कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप इस वर्ग में नपुंसकता, अनाचार, निराशा, लाचारी आ गई।

इसके अलावा, जब कुछ धर्मों ने बिना पसंद के मांस खाने को ऑफिशियली मान लिया और यह उपदेश दिया कि ऐसे लोगों को अपना खाना चुनने की कोई समझ नहीं होनी चाहिए, और एक और धर्म ने कहा कि सीधे मारने से दूर रहना चाहिए, लेकिन मारने का फल तो मिल ही सकता है (जैसे खेती में बहुत हिंसा होती है इसलिए खेती से दूर रहो लेकिन खेती का बिज़नेस कर सकते हो), तो ये लोग कमोबेश यूटिलिटेरियन बन गए।

सवाल: दो और सवाल हैं, एक तो हमें मिलने वाले बीफ़ की क्वालिटी के बारे में और दूसरा, क्या इकोलॉजिकल गड़बड़ी हम पर असर डालेगी, जो गन्ना, चाय, कॉफी, घास की खेती के लिए पेड़ों की बहुत ज़्यादा कटाई से होती है। इसके अलावा, उन देशों में चाय बनाने के लिए थोड़ी मात्रा में अदरक, इलायची की भी ज़रूरत होती है, जिसमें दूध, चीनी और मसाले मिलाए जाते हैं।

जवाब: यह निश्चित रूप से चिंता का विषय है जिसके लिए हमने क्लाइमेट चेंज पर चर्चा और फॉलो-अप एक्शन को बढ़ावा दिया है, उम्मीद है कि इस एक्सरसाइज से कोई समाधान निकलेगा, चिंता न करें।

सवाल: हम कब तक उन पर बढ़त बनाए रखेंगे?

जवाब: यह वह सवाल है जिसके बारे में उन्हें ज़्यादा सोचना चाहिए। हम सब इंसान हैं और हर नस्ल की फिजिकल, मेंटल, इमोशनल और स्परिचुअल ताकत लगभग बराबर है। उन पर हमारी बढ़त हमारी ज़्यादा ताकत की वजह से नहीं, बल्कि उनकी कमज़ोरी की वजह से है। सीधी सी बात है, अगर कोई बैल को मार रहा है, तो उसे परेशान किया जाएगा, अगर कोई बेरहमी से बैल को नपुंसक बना रहा है, तो उसके साथ बैल जैसा बेरहमी से बर्ताव किया जाएगा और इस तरह वह कायर बन जाएगा और मुकाबला करने की हालत में नहीं रहेगा। उन लोगों की हालत देखो जो बैल, गाय, भैंस और भैंस का इस्तेमाल

और बुरा बर्ताव करते हैं, कितनी दयनीय है, चाहे वे किसान हों, दूधवाले हों या उनके पुजारी, क्या आपको लगता है कि वे कभी अपने तरीके बदलने का मन बनाएंगे? एक तरह से उन्होंने उसी भगवान को नाराज़ किया है जिसकी वे पूजा करते हैं। उन पर हमारी बढ़त के बारे में आप और क्या सुनना चाहते हैं।

प्रश्न: तो क्या हम बीफ़ की लगातार सप्लाई के बारे में आश्वस्त हो सकते हैं?

उत्तर: हां, बिल्कुल, जब तक हम अपना दबदबा बनाए रखते हैं, आराम का समय ही मालिक है।

सवाल: एक आखिरी सवाल, क्योंकि हम गाय और दूसरे जानवरों पर इतना जुल्म कर रहे हैं, तो क्या यह सोचना सही नहीं होगा कि बदले में इंसानों को इन सभी जानवरों से श्राप मिल रहा होगा। क्या यह नतीजा नहीं निकाला जा सकता कि जानवरों की मदद से बना सारा दूध और खेत की सारी पैदावार श्रापित हो गई होगी? क्या ऐसा श्रापित दूध पीने और ऐसा श्रापित खाना खाने से हम बुरे नहीं बन जाएंगे?

उत्तर: एक तरह से आप सही हैं, शायद हमें जीने का कोई नया तरीका खोजना होगा?

टिप्पणी

(i). दुनिया में हर धर्म का गाय और बैल से कुछ कनेक्शन पाया गया है, कुछ लोग गाय को अपनी बलि और शुद्धि प्रक्रिया का ज़रूरी हिस्सा मानते हैं, जबकि कुछ दूसरे लोग गाय और बैल को पवित्र मानते हैं। एक धर्म कहता है कि आज के ज्ञानी लोग मुक्ति पाने से पहले अपने पिछले जन्मों में गाय रहे होंगे, इसलिए, उनके धर्म में गाय की पूजा तब की जाएगी जब वह सभी कर्मों से मुक्त हो जाएगी।

कुछ धार्मिक लोग तो यह भी कहते हैं कि आज के अवतार में गाय और बैल देवी-देवताओं के श्राप का नतीजा हैं। लेकिन एक बात बहुत दुख देने वाली लगती है कि इन सभी धर्मों के लोगों ने मिलकर गाय और बैल पर जुर्म करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, जिससे बदले में न सिर्फ पूरी इंसानियत दुखी हुई बल्कि पूरी धरती और उसका इकोसिस्टम भी पीछे छूट गया।

ii. कहा जाता है कि महर्षि दुर्वासा पहले व्यक्ति थे जिन्होंने गाय को माता कहा और गाय की पूजा बैल से की, जो प्यार और ताकत का प्रतीक है। ऐसा इसलिए है क्योंकि गाय का दूध पीने से बच्चे/इंसान या जो भी इसे पीता है (चाहे वह कुत्ते, बिल्ली, शेर, हाथी, सुअर वगैरह का बच्चा हो) उसका नेचर/कैरेक्टर/DNA वही रहता है, जो भैंस, बकरी, ऊट, शेरनी वगैरह का दूध पीने पर नहीं होता। यही बेसिक वजह है कि आज भी भारत में अगर कोई बच्चा अपनी मां के दूध से वंचित है (किसी भी वजह से) तो उसे गाय का दूध देने की सलाह दी जाती है, न कि किसी दूसरी औरत का, भले ही वह बच्चे की रिश्तेदार हो। यही वजह है कि गाय को दुनिया भर में इंसानों समेत हर जीव की दूसरी मां माना जाता

हैं, इसलिए गाय के साथ मां के अलावा किसी और तरह का व्यवहार करना दिमागी तौर पर दिवालिया, इमोशनली बर्बाद और स्परिचुअली गलत है।

(iii). यह एक समय से परखा हुआ और बिना किसी शक के साबित हुआ सच है कि ड्रिंक्स (पानी, दूध, फलों का जूस, सूप) आवाज़ पर असर डालते हैं, खाना मूड/दिमाग पर असर डालता है और नशा हालत/किस्मत तय करता है (जैसे पानी वैसी आवाज़ , उदाहरणार्थ खाना वैसा मन , उदाहरणार्थ ड्रग्स वैसी दशा : जैसा पानी वैसी वाणी , जैसा ऐन वैसा मन, जैसा नाशी वैसी दशा , 'जैसा जल, वैसी वाणी', जैसा अन्न, वैसा मन, जैसा नशा, वैसी अवस्था)।

इसके अलावा, ड्रिंक्स और फूड सिर्फ़ वो नहीं हैं जो मुँह से या इंजेक्शन से लिए जाते हैं, बल्कि फूड और ड्रिंक्स में बहुत सी ऐसी चीज़ें शामिल हैं जिन्हें लोग आँख, कान, नाक और छूने से लेते हैं। कहा जाता है कि दौलत, नाम, शोहरत, पावर और यहाँ तक कि ज्ञान का नशा सबसे ज़्यादा बेहतर और पक्का होता है, इसलिए इसे इंसानियत को बिगाड़ने के लिए ज़्यादा खतरनाक/ज़हरीला कहा जा सकता है।

इसके अलावा, जिस तरह से ये (ड्रिंक, फूड और नशीले पदार्थ) सोर्स किए गए (उगाए गए, इकट्ठा किए गए, प्रोसेस किए गए, स्टोर किए गए, पकाए गए या रेफ्रिजरेट किए गए), परोसे गए और लिए गए (पीए गए और खाए गए) वे पाने वाले की आवाज़, दिमाग और हालत को बनाते हैं। इस तरह ड्रिंक्स, फूड और नशे की इस पूरी प्रक्रिया का हर पहलू इंसानियत और हमारे पूरे एटमॉस्फियर/एनवायरनमेंट पर असर डालता है।

4. ऐसे हालात को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि ऋषियों की गैर-मौजूदगी में, साधु और साध्वी; सुखी गुरु और सद्गुरु की पूरी जाति ही भ्रष्ट हो गई होगी, वरना जानवरों पर ऐसा जुर्म मुमकिन ही नहीं था। यह कहा जा सकता है कि साधु, साध्वी, स्वामी, सन्यासी और संन्यासिन की जातियों को खुद को शुद्ध करने, गहरे ध्यान और बड़े यज्ञ की ज़रूरत है। यह उनका खुद पर भरोसा और कॉन्फिडेंस वापस लाने और लोगों को लीड करने और पुरानी बातों को सुधारने के लिए फिर से हकदार बनने का पहला ज़रूरी कदम है। यह सब दिखाता है कि धर्म को फिर से ज़िंदा करना कितना ज़रूरी और ज़रूरी हो गया है।

(5.6). साल 1999 में इस हज़ार साल की ज्योतिषीय भविष्यवाणी और भारत, पाकिस्तान और दुनिया में हुई कुछ ज़रूरी घटनाएँ। साल 1999 और साल 2000 में हुई कुछ ज़रूरी ज्योतिषीय भविष्यवाणी और बड़ी घटनाएँ, साथ ही उन पर नोट नीचे दिए गए हैं:

(5.6.i). प्रमुख ज्योतिषीय पूर्वानुमान

कि आने वाले हज़ारों सालों में रैप्चर, एंटीक्राइस्ट का आना, या साल 2000 के आस-पास आर्मागेडन की लड़ाई जैसी घटनाएँ होंगी, जबकि कुछ ने एलियन के आने, नए आइस एज, या पृथ्वी के एक्सिस में बड़े बदलावों जैसी ग्लोबल आपदाओं का अनुमान लगाया था।

कि मिलेनियम (साल 2000 और उसके बाद) में दूसरी बार आना और बहुत बड़ा बदलाव होगा, जो शायद तबाही (यानी हमारी सभ्यता का अंत) या सचमुच "दुनिया का अंत" भी हो सकता है, जहाँ "तत्व तेज़ गर्मी से पिघल जाएँगे", जिसे अक्सर बाइबिल में जजमेंट डे के मतलब से जोड़ा जाता है, जो 6,000 साल के इंसानी इतिहास को दिखाता है, जो खत्म होने वाला है।

आने वाले हज़ारों सालों में धरती गर्म होगी और ज़्यादा आबादी और प्रदूषण की वजह से क्लाइमेट में भारी नुकसान या तबाही होगी। नई तरह की बीमारियाँ और बड़े पैमाने पर बीमारियाँ आएँगी। नए हज़ारों सालों में पर्यावरण में इतनी ज़्यादा गिरावट आ सकती है कि जीवन को बनाए रखने के लिए ज़रूरी कुदरती संतुलन को खतरा हो सकता है। नए हज़ारों सालों में बड़ी कुदरती आफ़तें आ सकती हैं, जैसे: बड़े भूकंप, ज्वालामुखी, अकाल, महामारियाँ, और किसी बड़े शहर का उल्कापिंड से खत्म हो जाना।

कि सहस्राब्दी Y2K बग (मिलेनियम बग) के कारण व्यापक तकनीकी अराजकता देखेंगे। कई पुराने कंप्यूटर सिस्टम, मेमोरी को बचाने के लिए, केवल दो अंकों का उपयोग करके वर्षों को संग्रहीत करते हैं (उदाहरण के लिए, 1999 के लिए '99'), और डर यह था कि 1 जनवरी 2000 की आधी रात को, ये कंप्यूटर '00' को 2000 के बजाय 1900 के रूप में व्याख्या करेंगे। यह भविष्यवाणी की गई थी कि यह बिजली गिरावट, जल प्रणाली, टेलीफोन नेटवर्क जैसी आवश्यक सेवाओं में व्यापक ब्लैकआउट और बाधा पैदा करेगा, स्वचालित व्यापार त्रुटियों के कारण स्टॉक बाजारों में गिरावट, हवाई यातायात नियंत्रण प्रणाली की विफलता, जिससे संभावित विमान दुर्घटनाएँ होंगी और कंप्यूटर की समस्याओं के कारण सेवाएँ देने में असमर्थता के कारण अन्य सेवाओं में बाधा उत्पन्न होगी।

प्रोग्रामर और IT प्रोफेशनल की सालों की मेहनत की वजह से, जिन्होंने सिस्टम को अपडेट और टेस्ट किया, यह खतरनाक घटना काफी हद तक टल गई, जिससे ज़्यादातर लोगों के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं रही।

आने वाले हज़ारों सालों में यह देखा जाएगा कि अमीर और गरीब के बीच का अंतर बढ़ता जा रहा है।

(5.6.ii). साल 1999 और साल 2000 में हुई बड़ी इंटरनेशनल घटनाएँ

ह्यूमन जीनोम प्रोजेक्ट: पूरे ह्यूमन जीनोम के ड्राफ्ट की घोषणा की गई। यूरो करेंसी को 11 EU देशों के लिए इलेक्ट्रॉनिक करेंसी के तौर पर पेश किया गया (यूरो 'पाउंड, डॉलर और येन' की सीरीज़ में चौथी फ़िएट करेंसी बन गई , यानी यह सोने या चांदी जैसी किसी फ़िज़िकल चीज़ से सपोर्टेड नहीं है।

इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन को अपना पहला मॉड्यूल मिला, और Apple के iMovie जैसी बड़ी टेक लॉन्च हुई, जिसने डिजिटल भविष्य को आकार दिया। द मैट्रिक्स और स्टार वॉर्स; ब्लॉकबस्टर साइंस-फ़िक्शन फिल्में रिलीज़ हुईं। **द सिम्स**: पॉपुलर लाइफ़ सिमुलेशन गेम लॉन्च हुआ।

NATO ने फेडरल रिपब्लिक ऑफ़ यूगोस्लाविया (सर्बिया और मोंटेनेग्रो) पर हमला किया/बमबारी की, जो एक सॉवरेन देश था। हंगरी, पोलैंड और चेक रिपब्लिक NATO में शामिल हो गए।

(5.6.iii). साल 1999 और 2000 में भारत और पाकिस्तान की बड़ी घटनाओं में लाहौर डिक्लेरेशन (फरवरी 1999), अग्नि-II मिसाइल के प्रोटेस्टाइट की टेस्टिंग (11 अप्रैल, 1999), BJP का भारत की संसद में कॉन्फिडेंस वोट हारना (17 अप्रैल 1999), कारगिल युद्ध (मई-जुलाई 1999), पाकिस्तान में मिलिट्री तख्तापलट (अक्टूबर 1999), भारत में आम चुनाव (सितंबर-अक्टूबर 1999), ओडिशा सुपर साइक्लोन (29 अक्टूबर, 1999), और इंडियन एयरलाइंस की फ्लाइट 814 का हाईजैक (दिसंबर 1999), तीन नए राज्यों का बनना: झारखंड, छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड (नवंबर 2000), भारत की आबादी: 1 अरब तक पहुँच गई।

नोट: साल 1999 और 2000 में दुनिया और भारत और पाकिस्तान की बड़ी घटनाओं पर :

(i). दुनिया भर के अलग-अलग ज्योतिषियों की ऊपर की भविष्यवाणियाँ और साल 1999 और साल 2000 में भारत, पाकिस्तान और दुनिया में हुई असल घटनाओं (जैसा कि ऊपर संक्षेप में बताया गया है) ने हमें यह सोचने पर मजबूर किया कि “धर्म का फिर से आना, बुराइयों का खत्म होना, सज्जनों/संतों का उत्थान और दुनिया में धर्म संस्थान की स्थापना ही इंसानियत के पास एक सही विकल्प हो सकता है, अगर उसे ज़िंदा रहना है, तो सेहतमंद और खुशी से जीना तो दूर की बात है।”

(ii). हज़ारों सालों से ज्योतिषियों, भविष्य बताने वालों की भविष्यवाणियों पर ध्यान देना चाहिए और सभी लोगों और उनके नेताओं को उनके हिसाब से काम करना चाहिए ताकि सभ्यता बची रहे। (इसी को ध्यान में रखते हुए, नीचे साइन करने वाले ने धर्म को फिर से ज़िंदा करने और धर्म संस्थान बनाने की दिशा में काम करना शुरू किया ताकि भविष्य को शैतानी ताकतों के मनमाने कामों या अचानक आने वाली स्थितियों में सबको खत्म करने की घबराहट से बचाया जा सके।

(iii). अगर हम ऊपर बताई गई बड़ी घटनाओं को देखें, साथ ही भारत और पाकिस्तान ने युद्ध से पहले, उसके दौरान और बाद में हथियारों और गोला-बारूद की भारी खरीद की, तो यह महसूस करना मुश्किल नहीं होगा कि कारगिल युद्ध हथियार और गोला-बारूद, फाइटर जेट/प्लेन और दूसरे हथियारों के बेचने वालों का एक प्लान किया हुआ काम था, जिसमें पाकिस्तान के आर्मी जनरल और कुछ भारतीय नेताओं की मिलीभगत थी या नहीं (क्योंकि युद्ध के बाद आर्मी जनरल ने चुनी हुई सरकार पर कब्ज़ा कर लिया और भारत में, BJP गठबंधन NDA ने पहली बार चुनाव जीता।

इसके अलावा, हिंदू धर्म, अयोध्या में मंदिर बनाने और गोहत्या पर बैन लगाने का शोर युद्ध के दौरान ही मचा, जो नहीं तो मुमकिन नहीं था। इससे हिंदुओं के वोट उनके पक्ष में पक्के हो गए। पाकिस्तान में भी ऐसा ही हुआ था, जहाँ कारगिल युद्ध के दौरान मुस्लिम मौलवियों ने हिंदुओं और भारत के खिलाफ ज़हर उगला और अपनी चुनी हुई सरकार के ऊपर सेना की जगह पक्की कर ली, जिसे लाहौर डिक्लेरेशन की वजह से नरम घोषित कर दिया गया था।

BJP सरकार ने एक और धोखा यह किया कि उसने गायों की हत्या पर बैन लगाने का प्रस्ताव वापस ले लिया, एक बार इसलिए क्योंकि एक हिंदू महिला ने कहा था कि मैं बीफ खाती हूँ, मेरे फंडामेंटल राइट्स का क्या होगा और दूसरी बार बिना किसी साफ वजह के NDA सुबह एक बिल लाया और शाम को उसे वापस ले लिया। इसी वजह से कई हिंदू संतों ने उस समय के प्रधानमंत्री को पाखंडी कहा और 2004 के आम चुनाव में BJP का साथ नहीं दिया।

11 EU देशों के लिए इलेक्ट्रॉनिक करेंसी के तौर पर यूरो करेंसी **लॉन्च करना (जिससे यह 'पाउंड, डॉलर और येन' की सीरीज़ में चौथी फिएट करेंसी बन जाएगी)** यानी यूरो भी सोने या चांदी जैसी किसी फिजिकल कमोडिटी से सपोर्टेड नहीं होगा, जिससे न सिर्फ़ फाइनेंशियल मार्केट बल्कि पूरी इकॉनमी और इसके अलग-अलग सिस्टम में चिंता की बात है। शायद हमें खुद को याद दिलाना होगा कि सोने की लंका जल चुकी है और दुनिया बार्टर सिस्टम पर वापस आ गई है। शायद हमें करेंसी का नया रूप लाने के बारे में सोचना होगा जो बार्टर सिस्टम को भी सपोर्ट करे।

(5.7). कोरोना के फैलाव और उसके कारण विश्वव्यापी लॉकडाउन के दौरान व्यापक चर्चा ;

मैंने खुद कोल्हापुर के एक होटल में और फिर पटना साहिब गुरुद्वारा-पटना के गेस्ट हाउस में अकेले रहकर कोरोना के बढ़ने और होने और दुनिया भर में लॉकडाउन के ड्रामा को देखा। यह साफ तौर पर कहा जा सकता है कि कोरोना का आना एक नेचुरल काम हो सकता है लेकिन दुनिया भर में लॉकडाउन दुनिया की टॉप संस्थाओं द्वारा कम से कम तीस साल की अच्छी प्लानिंग के बिना मुमकिन नहीं हो

सकता, जिसमें फंड फ्लो की कोई दिक्कत न हो और दुनिया के लगभग सभी देशों के बड़े नेताओं का सहयोग हो।

संक्षेप में कोविड लॉकडाउन को लौह त्रिभुज (यानी दुनिया के अमीरों, राजघरानों और धार्मिक प्रमुखों का समूह) द्वारा शक्ति परीक्षण और प्रदर्शन दोनों कहा जा सकता है, जिसमें दुनिया के अग्रणी और अधिक आबादी वाले देश, चाहे वह अमेरिका, रूस, चीन, इंग्लैंड, यूरोपीय संघ, भारत या लैटिन अमेरिका का कोई देश हो, के राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री का समर्थन हो या न हो।

यह भी कहा जा सकता है कि संयुक्त राष्ट्र एवं अन्य एजेंसियों द्वारा चलाए गए विभिन्न कार्यक्रम जैसे “पू को शौचालय ले जाना”, “हर घर तक स्वच्छ ऊर्जा (एलपीजी सिलेंडर) पहुंचाना”, “दुनिया के हर देश में सभी का जीरो बैलेंस बैंक खाता खोलना”, “गरीबों को मुफ्त राशन की आपूर्ति”, “बहुत बड़े डेटा के प्रवाह को संभाल सकने वाले सॉफ्टवेयर तैयार करना” विशेष रूप से ‘ऑनलाइन वित्तीय लेन-देन’, ‘जूम पर मीटिंग’ और विकासशील देशों को इसे लागू करने के लिए अनुदान देना, ये सभी इस तरह के पहले एक साथ विश्वव्यापी लॉकडाउन के लिए इन संस्थाओं का हिस्सा थे। इस संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि; “स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम)”, “प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना”, “प्रधानमंत्री जन धन योजना”, “प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना (गरीबों को मुफ्त राशन वितरण की)”, सभी लॉकडाउन के लिए आवश्यक वैश्विक तैयारी का हिस्सा थे।

[सीधी सी बात है अगर इतनी बड़ी संख्या में टॉयलेट नहीं बनाए गए (भारत में तीन करोड़ से ज्यादा), करोड़ों सिलेंडर नहीं बांटे गए, भारत और दुनिया भर में बैंक अकाउंट नहीं खोले गए तो क्या एजेंसियों के लिए एक गांव में भी लॉकडाउन लगाना मुमकिन नहीं होगा, पूरे भारत या दुनिया की तो बात ही क्या? टॉयलेट, LPG गैस सिलेंडर, महीने का राशन, कैशलेस ट्रांज़ैक्शन के लिए बैंक अकाउंट की सुविधा के बिना क्या कोई एजेंसी करोड़ों लोगों को उनके घर/घरों में बंद करके लॉकडाउन करने के बारे में सोच भी सकती है।]

(5.6.i). कोई कुछ भी कहे, लेकिन कोरोना और दुनिया भर में लॉकडाउन ने बिना किसी शक के यह साबित कर दिया है कि दुनिया एक है (अगर यह एक नहीं होती तो एक बीमारी दुनिया भर के लोगों को प्रभावित नहीं कर सकती थी और एक साथ लॉकडाउन सफल नहीं हो सकता था) और साथ ही यह भी साबित हो गया है कि देशों पर उस देश के प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति का राज नहीं होता (चाहे वह USA, रूस, एशिया, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, चीन, इंग्लैंड, यूरोपियन यूनियन, लैटिन अमेरिका या भारत हो) बल्कि कुछ अमीरों, राजघरानों और धार्मिक नेताओं का गुप राज करता है जो पूरी दुनिया में एक साथ कई बार लॉकडाउन लगाकर अपनी ताकत आजमाना चाहते हैं। *

(5.6.ii). आध्यात्मिक दुनिया में कहा जा रहा है कि इस युग (कलयुग) की शुरुआत से ही एक ऐसा ग्रुप है जिसे चालाकी और काले विज्ञान की गहरी जानकारी है, जो दुनिया पर राज करना चाहता है। इंसानों, पक्षियों, जानवरों और मछलियों, पेड़-पौधों, धरती, पहाड़ों और पानी की चीजों पर हो रहे सभी अत्याचारों के पीछे यही ग्रुप है, जिससे यह धरती रहने लायक नहीं रह गई है। आध्यात्मिक दुनिया में यह भी कहा जा रहा है कि COVID का फैलना और दुनिया भर में लॉकडाउन उनका आखिरी ताकत दिखाना था और बाद में “पहलगाम में हुआ आतंकी हमला” एक नया वर्ल्ड ऑर्डर यानी पूरी दुनिया पर अपना राज मज़बूती से बनाने की शुरुआत है।

ऊपर बताए गए हालात बहुत डरावने हैं और इन्हें जारी रखना और हमसे ऐसी कोशिश करने के लिए कहना कि हम अभी जिस सुरक्षा की कमज़ोरी से गुज़र रहे हैं, वह न सिर्फ़ खत्म हो जाए बल्कि ऐसा हल मिले जो लंबे समय तक चले, जिसका मतलब है कि धर्म की वापसी, बुराइयों को खत्म करने और सज्जनों को ऊपर उठाने और धर्म संस्थान बनाने का समय आ गया है, ताकि समाज में भरोसा और कॉन्फिडेंस वापस आ सके, हमारी सभ्यता की शान वापस आ सके और इकोसिस्टम में बैलेंस आ सके।

(6). इस परिदृश्य में क्या किया जा सकता है :

इसका हल सिर्फ़ आम लोगों के पास ही हो सकता है – अगर कोई है तो और उसके लिए लोगों को आपस में और अपने ग्रुप से बातचीत करनी होगी – आम सहमति बनानी होगी और प्लान के हिसाब से उनके खिलाफ खड़ा होना होगा – और इसी कोशिश से यह मुमकिन है कि तथाकथित ताकतवर लोग भी आम लोगों के नुमाइंदों से बातचीत करें और एक मंथन हो ताकि दुनिया का सार बच जाए और ज़हर अलग हो जाए।

कोशिशें ज़रूरी हैं, इसे भी बचाना है, साधु-संतों को भी बचाना है, और ऐसी कोशिशों में तेज़ी लाने की ज़रूरत है, ताकि दुनिया बच सके और धर्म फिर से ज़िंदा हो सके और धर्म संस्थान बन सकें।

क्या हमें किसी जादू और चमत्कार का इंतज़ार करना चाहिए या किसी नए भगवान के आसमान से उतरकर हमारी समस्या हल करने का? या हमें मौके का फ़ायदा उठाते हुए धर्म को फिर से ज़िंदा करने और धर्म संस्थान बनाने के लिए काम करना शुरू कर देना चाहिए?

(7). समापन प्रस्तुति

कहा जाता है कि सूरज के नीचे कुछ भी नया नहीं है और सूरज को सबसे ताकतवर और सबसे ज़्यादा दिखने वाला देवता (तीन देवता: बनाने वाला, पालने वाला और तोड़ने वाला) कहा जा सकता है, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह सारे योग (ज़िंदगी की सच्चाई) जानता है और इसलिए अगर हम सूरज को

प्रणाम (सूर्य-नमस्कार) करें तो रास्ता ज़रूर हमारे सामने आएगा और हम धर्म को फिर से ज़िंदा कर पाएँगे और धर्म संस्था बना पाएँगे।

ऊपर दी गई जानकारी आपके पढ़ने और सहयोग के लिए दी गई है,
भगवान भारत और दुनिया को आशीर्वाद दें,

भवदीय

नरेंद्र

धर्म के पुनरुत्थान के लिए,

वेबसाइट: resurrectionofdharma.com), तारीख: 31.12.2025, दिल्ली, इंडिया,